हमारे पार्टी संगठन के इतिहास के कुछ महत्वपूर्ण सबक

हमारा पार्टी संगठन– भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)– 29 वर्ष पूरे कर चुका है। इतना लम्बा समय बीत जाने के बाद वक्त आ गया है कि हम अपने पार्टी के इतिहास का सार-संकलन करें और अपने इतिहास के नकारात्मक और सकारात्मक अनुभवों से सबक निकालें।

यहां प्रस्तुत सार-संकलन हमारी ओर से प्रस्तुत अन्तरिम सार-संकलन है जिसका मुख्य उद्देश्य अतीत पर फैसले सुनाना नहीं, बल्कि वर्तमान के लिए उपयोगी सबक निकालना है। अंतिम सार-संकलन के लिए पार्टी इतिहास संबंधी तथ्यों की और मुकम्मल जानकारी, और अधिक वैचारिक परिपक्वता तथा अनुभव की दरकार है।

I

हम भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन के हिस्से हैं। भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में व्याप्त संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष के दौरान नक्सलबाड़ी किसान उभार हुआ था। इसके बाद संशोधनवाद से निर्णायक विच्छेद करके कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की अखिल भारतीय तालमेल कमेटी (ए.आई.सी.सी.सी.आर.) का गठन हुआ। इस तालमेल कमेटी ने जल्दबाजी में तथा कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के एक हिस्से को नौकरशाहाना व मनमाने तरीके से अपने से बाहर करके आतंकवादी राजनीतिक लाइन व संकीर्णतावादी सांगठनिक लाइन के आधार पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) का अप्रैल, 1969 में गठन किया था, जिसकी पहली कांग्रेस (आठवीं कांग्रेस) 1970 में हुई थी।

वस्तुतः भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के संशोधनवाद से निर्णायक विच्छेद के समय से ही कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की विचारधारात्मक कमजोरी प्रकट हो गयी थी। संशोधनवादी नेतृत्व के विरुद्ध पार्टी में पर्याप्त धैर्य के साथ विचारधारात्मक संघर्ष नहीं चलाया गया था। इसकी अगली कड़ी में कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की अखिल भारतीय तालमेल कमेटी के भीतर भी विचारधारात्मक व राजनीतिक संघर्ष न के बराबर हुए। क्रांतिकारी जन दिशा और आतंकवादी कार्य दिशा के बीच भी उस समय निर्णायक संघर्ष नहीं हुए। वास्तविकता तो यह है कि नक्सलबाड़ी किसान उभार को क्रांतिकारी जन दिशा ने अंजाम दिया था। लेकिन उसके प्रस्तोताओं ने आतंकवादी कार्य दिशा के समक्ष समर्पण कर दिया।

यहां यह प्रस्थापना एक बार फिर से सच साबित हो गयी कि अक्सर संशोधनवादी पापों की सजा के बतौर 'वामपंथी' भटकाव मजदूर आंदोलन में आते हैं। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) की आतंकवादी कार्यदिशा इसका प्रमाण थी।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) ने अपने गठन के समय से जो कार्यदिशा अपनायी थी, उसकी तार्किक परिणति फूट-दर-फूट में होनी ही थी। और वही हुआ भी। आतंकवादी कार्यदिशा पर आधारित संगठन किसी प्रकार की बहस-मुबाहसे की गुंजाइश ही नहीं रखता। संकीर्णतावादी सांगठनिक लाइन इसकी सहवर्ती होती है। फलस्वरूप, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) जल्द ही कई टुकड़ों में बंट गई। इसी प्रक्रिया में कई पार्टी ग्रुप अस्तित्व में आये। इनमें से एक केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) का फरवरी, 1974 में गठन किया गया। इसका गठन भी राजनीति को कमान में रखकर नहीं बल्कि संगठन को कमान में रख कर किया गया था। नतीजतन, यह एक तालमेल करने वाली निकाय बनी रही और इसके भीतर राजनीतिक मतभेद बढ़ते गये। अंततोगत्वा मई 1977 में यह भी फूट का शिकार हो गयी और कई हिस्सों में बंट गयी।

केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के अंतर्गत काम करने वाली दिल्ली राज्य इकाई और बिहार-पूर्वी उत्तर प्रदेश राज्य सांगठनिक कमेटी के अंतर्गत कार्य करने वाली दो आंचलिक कमेटियों के सदस्य तथा कुछ अन्य साथियों ने मिलकर भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) का स्थापना सम्मेलन 1978 में आयोजित किया।

फरवरी, 1978 के स्थापना सम्मेलन में पार्टी कार्यक्रम, भारतीय क्रांति का मार्ग, भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन के हाल के इतिहास सम्बन्धी कुछ सवालों पर हमारे दृष्टिकोण और पार्टी संविधान के अतिरिक्त "तीन दुनिया के विभेदीकरण" के वर्ग-सहयोगी सिद्धान्त का समर्थन करने वाले तथा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की 11वीं राष्ट्रीय कांग्रेस को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने व उसकी केन्द्रीय कमेटी के अध्यक्ष के बतौर हुआ-कुओ-फेंग के चुने जाने पर बधाई देने वाले दो प्रस्ताव पारित किये गये। बाद वाले प्रस्ताव में सच्चे कम्युनिस्टों को 'चार का गिरोह' कहा गया तथा उसकी अति दक्षिणपंथी प्रति क्रांतिकारी गिरोह कह कर निंदा की गयी। विचारधारा के प्रश्न पर यह हमारी भयंकर गलती थी। भारतीय क्रांति के कार्यक्रम के मसविदा में भारत को अर्द्ध-औपनिवेशिक और अर्द्ध-सामंती देश कहा गया और क्रांति की मंजिल

जनता की जनवादी क्रांति निर्धारित की गयी। इसी के साथ ही, दलाल पूंजीपति वर्ग के स्थान पर शत्रु-सहयोगी पूंजीपति वर्ग (Collaborationist Bourgeoisie) रखा गया तथा ग्रामीण इलाकों में खेत मजदूरों की मौजूदगी की चर्चा की गयी। भारतीय क्रांति के मसविदा दस्तावेज में चार वर्गों के आधार पर निम्न-पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय-पूंजीपति वर्ग के संश्रय– के बल पर दीर्घकालीन लोक युद्ध के रास्ते को स्वीकार किया गया। दरअसल, 'भारतीय क्रांति का मार्ग' दस्तावेज कामरेड डी.वी. राव के एक लेख की हू-ब-हू नकल पर आधारित था। 'हाल के भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास सम्बन्धी कुछ सवालों पर हमारा दृष्टिकोण' दस्तावेज में का. चारू मजूमदार के नेतृत्व में बनी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) की कार्यदिशा को आतंकवादी कहा गया तथा भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के गठन को एक एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन के रूप में स्वीकार नहीं किया गया बल्कि इसे रद्द किया गया। उसे उस समय मौजूद कई कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुपों में एक स्वीकार किया गया। सी.पी.आई. (एम.एल.) पर ये अवस्थितियां सही थीं।

केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) के दौरान हम लोगों के बीच जो दो महत्वपूर्ण सवाल– भारत में भूमि सम्बंध और भारतीय पूंजीपति वर्ग का साम्राज्यवाद के साथ सम्बन्ध– तीखे ढंग से उठ खड़े हुए थे, उनके जवाब तलाशने का कार्यभार निर्धारित किया गया। इसे अंजाम देने के लिए हम अपनी आशायें डी.वी.राव ग्रुप [उस समय यू.सी.सी.आर.आई. (एम.एल.)] के साथ एकता होने पर केन्द्रित किये हुए थे। इस ग्रुप के साथ एकता न होने और कानू सान्याल ग्रुप के साथ [उस समय ओ.सी.सी.आर.आई. (एम.एल)] एकता प्रयास असफल होने के बाद इन सवालों का हल निकालने के लिए हमारे संगठन को इस कार्य में अकेले ही लगना पड़ा।

स्थापना सम्मेलन के पहले से हमारा जनाधार पश्चिमी बिहार-पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में खेत मजदूरों व गरीब किसानों के बीच था। यह जनाधार आतंकवादी कार्यदिशा छोड़ने के बाद क्रमशः बढ़ता जा रहा था 1973-77 के दौरान कुछ इलाकों से आतंकवादी कार्यदिशा पर अमल करने वाले संगठनों का जब पलायन हो रहा था, उस समय उन्हीं इलाकों में हमारा जनाधार विस्तृत हो रहा था। स्थापना सम्मेलन से लगभग चार महीने पहले हमारे चार किसान संगठनकर्ताओं- का. लल्लन राम, का. शिवमुनि राम, का. श्रीनायक राम और का. सिद्धनाथ कमकर- की हत्या कर दी गयी थी। इन हत्याओं के लगभग दो वर्ष बाद स्थापना सम्मेलन में चुनी गयी केन्द्रीय कमेटी के एक वैकल्पिक सदस्य का. हीरा लाल के साथ तीन और किसान कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी गयी। इन आठ साथियों की शहादत के बाद उक्त इलाके में हमारे काम प्रभावित हुए।

छात्रों के मोर्चे पर हमारे कार्य स्थापना सम्मेलन के समय से दिल्ली और बनारस में थे। इसके अलावा हमने अन्य कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों से जुड़े कुछ संस्कृति कर्मियों को मिलाकर एक सांस्कृतिक संगठन गठित किया।

आठ साथियों की शहादत के बाद हमने खेत-मजदूरों और गरीब किसानों के बीच अपने काम से हाथ खींच लिया। संघर्ष के इलाके से क्रमशः पलायन और निम्न-पूंजीवादी तत्वों-तबकों के बीच काम को फैलाकर हमारे पार्टी संगठन का निम्न-पूंजीवादी चरित्र क्रमशः बढ़ता गया। एक तरफ हम जन-संघर्षों के इलाके से पलायन कर रहे थे और दूसरी तरफ, पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में नौजवान संगठन खड़ा करने का प्रचार अभियान ले रहे थे। इसमें भी हम धनी किसानों और खुशहाल मध्यम किसानों के नौजवानों के बीच मुख्यतः प्रचार अभियान चला रहे थे। ग्रामीण इलाकों में खेतीहर मजदूर व गरीब किसानों की आबादी को हम जानबूझ कर नजरअंदाज करते थे। वस्तुगत तौर पर यह हमारे द्वारा निम्न-पूंजीवादी आधार बनाने का एक प्रयास था।

अपने स्थापना सम्मेलन में हमने संसदीय चुनावों को संघर्ष का एक रूप माना था तथा सर्वहारा वर्ग की पार्टी द्वारा इसके इस्तेमाल को रणकौशल का सवाल कहा था। यह सही अवस्थिति थी। लेकिन उस समय हमारा संगठन पस्तहिम्मती और निराशा के दौर से गुजर रहा था। हमने अपने संगठन के लिए रणनीतिक कार्यदिशा निर्धारण का लक्ष्य निर्धारित किया था। हम उस कार्य में नहीं लगे, बल्कि पस्तहिम्मती और निराशा को दूर करने के लिए संसदीय चुनावों में भागीदारी का फैसला लिया। इसमें भी हमारा सुविचारित लक्ष्य नहीं था। दरअसल यह हमारे लिए विपथगामी कदम बन गया। अतः इस भागीदारी ने संगठन में मौजूद पस्तहिम्मती व निराशा को बाद में और बढ़ा दिया।

उस समय अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के भीतर व्यापक फूट, विग्रह और विचारधारात्मक विभ्रम की स्थिति मौजूद थी। माओ की मृत्यु के बाद चीन में पूंजीवादी पथगामियों ने सत्ता पर कब्जा कर लिया था। लेकिन उसके द्वारा सत्ता पर कब्जे को हमने सही माना था। इसका कारण यह था कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर चल रहे दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष की हमारी समझ बहुत उथली थी। महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के सबकों के बारे में हमारी वर्ग-दृष्टि धूमिल थी। इसके चलते हम हुआ-कुओ-फेंग की मध्यमार्गी व अवसरवादी कार्यदिशा को समझने में असफल रहे। हमने 'तीन दुनिया के विभेदीकरण' के सिद्धान्त का समर्थन किया, जो सारतः वर्ग-सहयोगी सिद्धान्त था। यह

हमारी विचारधारात्मक कमजोरी का परिणाम था। बाद में हमने अपनी आत्म-आलोचना करके सही विचारधारात्मक अवस्थिति ग्रहण की।

विश्वव्यापी पैमाने पर कम्युनिस्ट आंदोलन में बिखराव और चीन में पूंजीवादी पुनर्स्थापना हो जाने के बाद समाजवादी देशों का अस्तित्व में न रह जाना हमारी पस्तहिम्मती और निराशा को और अधिक बढ़ा रहा था। इसी के साथ ही देश के भीतर कुछ-एक ही संगठन थे जो कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के समक्ष खड़ी विचारधारात्मक चुनौतियों को स्वीकार कर रहे थे। अधिकांश कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन विचारधारात्मक-राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने से कतरा रहे थे। वे विचारधारा के क्षेत्र में महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति और चीन में पूंजीवादी पुनर्स्थापना को समझने में असमर्थ थे। इस कारण से भी, माओ-त्से-तुंग विचारधारा की अंतर्वस्तु को वे गलत तरीके से नव-जनवाद के कार्यक्रम के साथ अभिन्न रूप से जोड़कर पेश करते रहे। इसी प्रकार, भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तनों को वे देखने से इंकार करते रहे। वे इन परिवर्तनों पर सोचने के लिए भी तैयार नहीं थे। इसके अतिरिक्त, इनमें से कुछ आतंकवादी कार्यदिशा का दिवाला पिट जाने के बावजूद उसी पर डटे हुए थे। कुछ आतंकवादी कार्यदिशा और जनदिशा की खिचड़ी पका रहे थे। कुछ दक्षिणपंथी कार्यदिशा को अपनाने की ओर जा रहे थे। समग्र तौर पर, यह समूची परिस्थिति हमारे संगठन के भीतर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रही थी।

1980 के संसदीय चुनावों में हिस्सा लेने के बाद हमारे संगठन में पहली फूट पड़ी। इस फूट के बाद दिल्ली राज्य कमेटी का अधिकांश हिस्सा संगठन से अलग हो गया। इसमें दो केन्द्रीय कमेटी सदस्य संगठन से अलग होकर कुछ दिनों में निष्क्रिय हो गये। यह फूट उसी पस्तहिम्मती और निराशा के वस्तुगत माहौल की वजह से तो हुई ही थी, साथ ही यह संगठन में प्रभावी निम्न-पूंजीवादी माहौल का भी प्रतिबिम्बन थी। विचारधारात्मक व राजनीतिक संघर्ष को ठीक से न चलाने के कारण भी यह फूट हुई थी। यदि व्यक्तियों की कमजोरियों के विरुद्ध जरूरत से ज्यादा संघर्ष किया जाय और पार्टी संगठन की आम कमजोरियों व दिक्कतों को नजरअंदाज किया जाय तो गैर-जरूरी व अवांछित फूट का शिकार होना पड़ता है। इस फूट से पहले केन्द्रीय कमेटी सदस्यों की व्यक्तिगत कमजोरियों पर प्रहार किये गये थे। संगठन की आम राजनीतिक दिशा और आम कार्यभारों के संदर्भ में पूरी केन्द्रीय कमेटी अपनी गलतियों और असफलताओं की चर्चा न करके अलग-अलग सदस्यों (एक को छोड़कर) की निजी कमजोरियों पर प्रहार कर रही थी। इस गलत कार्यशैली के कारण भी 1980 में संगठन को फूट का शिकार होना पड़ा। इससे पहले से कमजोर संगठन और ज्यादा कमजोर हो गया। आगे यह गलत कार्यशैली बार-बार अपने को व्यक्त करती रही।

हमारे पार्टी संगठन के इतिहास में विभिन्न प्रश्नों पर मतभेद उठते रहे हैं तथा इन पर संघर्ष भी होते रहे हैं। लेकिन इनको ठीक ढंग से न संचालित करने, लेनिनवादी उसूलों के आधार पर संगठन को न खड़ा करने तथा सामूहिक नेतृत्व की प्रणाली को न स्थापित करने के कारण इन दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष सही कार्यदिशा को स्थापित करने और गलत कार्यदिशा को पराजित तथा उसको अलग-थलग करने की ओर नहीं ले गये। आगे की फूटों में यह और भी ज्यादा अच्छी तरह उजागर होता है।

1981 से लेकर 1983 के बीच भारतीय क्रांति के कार्यक्रम के सवाल को लेकर गम्भीर अध्ययन किया गया तथा 1983 में 'लाल तारा-2' के प्रकाशन के साथ हमने समूचे खेमे के समक्ष समाजवादी क्रांति की मंजिल को निरूपित करने वाला विश्लेषण पेश किया। यह समूचे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी खेमे के समक्ष बहस-मुबाहसे के लिए लिखा गया निबंध था। लेकिन इसे हमारे संगठन के भीतर एक बुनियादी दस्तावेज का दर्जा हासिल था।

'लाल तारा-2' के प्रकाशन के बाद संगठन में एक नया उत्साह आया। इसने कम्युनिस्ट क्रांतिकारी खेमे के भीतर भारतीय क्रांति के कार्यक्रम के सवाल को लेकर सोचने को विवश करने में पहलकदमी ली। इसने भारतीय समाज में आये बुनियादी बदलावों को सटीक तरीके से चिह्नित किया और तार्किक तरीके से सिद्ध किया कि भारतीय समाज मूलतः और मुख्यतः पूंजीवादी समाज में तब्दील हो चुका है।

'लाल तारा- 2' में पार्टी-पुनर्गठन और पार्टी-निर्माण के बारे में गलत विचारधारात्मक दृष्टिकोण मौजूद था। इसमें चर्चा का विषय था कि, विचारधारा आम लोगों का प्राधिकार कैसे बनती है। तब भी इसमें पार्टी-निर्माण व पार्टी-गठन के सम्बन्ध में ऐसी प्रक्रिया बतलाई गयी है जो मूलतः गलत है। 'लाल तारा- 2' में कहा गया है-

> "…. इतिहास बोध से लैस बुद्धिजीवी इसे सबसे पहले समझते हैं। उसके बाद प्रचार-प्रसार के दौरान अपने विरोधी विचारों से तीखे संघर्षों में क्रमशः इसकी वरीयता स्थापित होती है। फिर ये बुद्धिजीवी इसे समाज के सबसे क्रांतिकारी वर्ग और अन्य क्रांतिकारी वर्गों के पास ले जाते हैं। इसके अग्रिम तत्व इसे अंगीकार करते हैं, और इस तरह मार्क्सवादी विचारधारा एक अच्छी खासी संख्या द्वारा स्वीकार की जाती है। फिर अध्ययन चक्रों का जाल सा बिछ जाता है। ये अध्ययन चक्र ही भावी पार्टी के भ्रूण रूप होते हैं। अध्ययन चक्रों के सदस्य

क्रांतिकारी वर्गों में उत्तेजना और प्रचार के काम को अपने हाथों में लेते हैं और उन्हें आंदोलित, गोलबंद और संगठित करते हैं। इस तरह वे समाज को समझने का काम शुरू करते हैं। उत्तेजना, प्रचार और संगठन के दौरान समाज विशेष की ठोस सच्चाइयों से उनका सामना होता है और उसकी विशिष्टताओं को वे मार्क्सवाद से जोड़ने का काम शुरू करते हैं। इस तरह मार्क्सवाद से लैस अनुभवी कार्यकर्ताओं की कतार तैयार होती है जो देश विशेष के लिए निश्चित कार्यक्रम तैयार करती है, समय-समय पर होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप रणकौशल तय करती है, अपनी कार्यशैली व सांगठनिक योजनाएं तैयार करती है और उन्हें सामाजिक-प्रयोग आन्दोलन के दौरान लागू करती है। इनमें मौजूद विसंगतियों का निवारण करती है और क्रमशः उसके द्वारा तय किये गये कार्यक्रम, रणकौशल, कार्यशैलियों एवं सांगठनिक योजनाओं की प्रामाणिकता ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा स्वीकार की जाती है....

"....वस्तुगत परिस्थितियों और मनोगत शक्तियों की तैयारी के मूल्यांकन के आधार पर ये कम्युनिस्ट क्रांतिकारी पार्टी-निर्माण के पहले और बाद में संघर्षों का नेतृत्व करते है और इस तरह समाज के क्रांतिकारी वर्गों के नेतृत्व के रूप में स्वीकार किये जाने लगते हैं..."।

(लाल तारा-2, भाकली (माले) का मुखपत्र, दिसम्बर-83, पृष्ठ-26-27, जोर मूल में)

यह पार्टी-निर्माण व पार्टी-गठन के संबंध में विशुद्ध मंसूबेबाजी है। इस मंसूबेबाजी में इतिहास बोध से लैस बुद्धिजीवियों की भूमिका के बारे में अतिशय जोर है। 'इतिहास बोध से लैस बुद्धिजीवी' के 'इतिहास बोध' से लैस होने की प्रक्रिया के बारे में यह कुछ नहीं कहता। साथ ही जो बात चिन्ताजनक है वो यह कि इस इतिहास बोध से लैस बुद्धिजीवी के क्रांतिकारी व्यवहार का पक्ष बहुत एकांगी, छिछला और जनता से कटा हुआ है। इसे अधिक से अधिक जनता को सिखाना है, उससे कुछ सीखना नहीं है। समाज के सबसे क्रांतिकारी वर्ग के पास मार्क्सवादी विचारधारा ले जाने और इसे अंगीकार करने की चर्चा महज प्रसंगवश है। इसके बाद बुद्धिजीवी समूचे देश में अध्ययन चक्रों का जाल बिछाकर कम्युनिस्ट पार्टी के भ्रूण रूप बन जाते हैं। इसी प्रक्रिया में ये कार्यक्रम इत्यादि का निर्धारण करते हैं। इस समूची प्रक्रिया में मजदूर वर्ग के वर्ग संघर्षों की भूमिका और उसके बीच से कतारों की भर्ती इत्यादि की बातें प्रसंगवश हैं, निर्णायक भूमिका इतिहास बोध से लैस बुद्धिजीवियों की है। यदि यहां यह कहा जाता कि सर्वहारा वर्ग की मुक्ति का दर्शन सर्वहारा वर्ग के बाहर से आया था और कि सबसे पहले सर्वहारा विचारधारा सर्वहारा वर्ग के पास बाहर से पहुंचती है तो ठीक बात होती। लेकिन यहां पार्टी-निर्माण व पार्टी-गठन के संबंध में मंसूबेबाजी की गयी है और यह हमारे पार्टी संगठन के आगे आनेवाले समय के निम्न-पूंजीवादी विच्युतियों व भटकावों का विचारधारात्मक आधार प्रस्तुत करती है। इन बातों में सिद्धान्त और व्यवहार के वास्तविक अन्तर्सम्बन्ध की समझदारी का अभाव है। मजदर वर्ग और उसके वर्ग संघर्षों की कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख भी गायब है।

1984 में सांस्कृतिक मोर्चे की तरफ से इसी पर केन्द्रित एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस आयोजन के बाद संगठन के राजनीतिक सुदृढ़ीकरण के लिए एक अध्ययन शिविर संगठित किया गया। इस अध्ययन शिविर में यह संकल्प लिया गया कि समाजवादी क्रांति की मंजिल के अनुरूप एक रणकौशलात्मक कार्यदिशा तय करने के लिए समाज के बुनियादी वर्गों के बीच काम किया जायेगा क्योंकि बुनियादी वर्गों के बीच काम के दौरान ही और उससे एक हद तक अनुभव अर्जित करने के बाद ही रणकौशल की कार्यदिशा सही तरीके से तय की जा सकती है। लेकिन व्यावहारिक तौर पर फैसला इसके विपरीत लिया गया। इसी अध्ययन शिविर में दो विश्व विद्यालयों में छात्रों के बीच काम करने का फैसला लिया गया। इसके लिए तर्क दिया गया कि अगुवा तत्वों की संगठन में भर्ती करने के लिए यह जरूरी है।

इस प्रकार, अभी तक नौजवान मोर्चे पर चल रहे ग्रामीण निम्न-पूंजीपति वर्ग के बीच काम को छोड़कर छात्रों के मोर्चे पर संगठन की ताकत को झोंक दिया गया। इसने संगठन को और ज्यादा शहरी निम्न-पूंजीवादी माहौल देने में वस्तुतः भूमिका निभायी। नौजवान मोर्चे के कामों का बिना समाहार किये छात्र मोर्चे के कामों की शुरूआत कर दी गयी।

1984 में हुए इस अध्ययन शिविर के पहले से हमारे संगठन में केन्द्रीय कमेटी नहीं रह गयी थी। इसके सिर्फ दो सदस्य ही संगठन में बचे थे। उस समय अनौपचारिक अंदाज में संगठनकर्ता कमेटी का गठन किया गया था। 1984 में इस कमेटी के रूप और अंतर्वस्तु में बेमेल होने का हवाला देकर केन्द्रीय संगठनकर्ता और संगठनकर्ता कमेटी के ढांचे को स्थायी शक्ल दे दी गयी।

हमारा पार्टी संगठन विचारधारात्मक और राजनीतिक तौर पर मूलतः सही अवस्थिति अपनाये हुए था और इन्हीं अवस्थितियों के आधार पर समूचे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी खेमे में बहस कर रहा था। लेकिन जन-कार्यों में यह अपने वर्ग-औद्योगिक सर्वहारा वर्ग-को संगठित करना तो दूर, यह पहले के जनाधार के वर्गों– खेतीहर मजदूरों और गरीब किसानों– के बीच के काम से पलायन कर चुका था। यह वर्ग-संघर्ष के अपने इलाकों को छोड़ चुका था और इसके

स्थान पर गैर-जोखिम भरे शहरी निम्न-पूंजीवादी तबकों के बीच अपने कामों को केन्द्रित कर रहा था। इसके साथ ही, लेनिनवादी सांगठनिक उसूलों को छोड़कर यह एक व्यक्ति का नेतृत्व स्थापित कर रहा था। इसके अतिरिक्त, 1984 के अध्ययन शिविर में रणकौशलात्मक कार्यदिशा तय करने के लिए जाहिर किये गये संकल्प और व्यावहारिक फैसले के बीच का दोहरापन भी संगठन के निम्न-पूंजीवादी भटकाव को परिलक्षित कर रहा था।

ऐसा नहीं है कि यदि हमारा संगठन पश्चिमी बिहार के खेत मजदूरों और गरीब किसानों के बीच वर्ग-संघर्ष विकसित करने में लगा रहता तो वह निम्न-पूंजीवादी भटकाव से मुक्त रहता। यहां सिर्फ निम्न-पूंजीवादी भटकाव के मजबूत होने के भौतिक आधार की चर्चा की गयी है। निम्न-पूंजीवादी भटकाव नक्सलबाड़ी के बाद बनी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) में भी प्रचुर मात्रा में था। हमारा संगठन उसी परम्परा में था। हमने राजनीतिक तौर पर आतंकवादी कार्यदिशा के मामले में उस परम्परा से सचेत विच्छेद किया था। लेकिन सांगठनिक लाइन के क्षेत्र में हमने लेनिनवादी उसूल अपनाने में पर्याप्त जोर नहीं दिया। इसका परिणाम यह रहा कि व्यवहार में निम्न-पूंजीवादी सांगठनिक लाइन हमारे संगठन में शुरू से मौजूद रही। इस सांगठनिक लाइन को खाद-पानी और ज्यादा तब मिला जब हम निम्न-पूंजीवादी तबकों के बीच काम करने का फैसला लेकर उसमें डट गये। यह सांगठनिक लाइन अनौपचारिकतावाद, व्यक्ति केन्द्रित विश्लेषण करने, व्यक्तियों से प्रतिशोधात्मक तौर पर निपटने के लिए उन्हें अलग-थलग करने, षड्यंत्र-प्रति-षड्यंत्र रचने, जवाबदेही की व्यवस्था न होने इत्यादि अनेक रूपों में व्यक्त होती रही है।

हमारी गलती सिर्फ यह नहीं है कि हमने एक समय में कोई गलत फैसला लिया था। उस गलती पर डटे रहना और किन्तु-परन्तु लगाकर उसको सही सिद्ध करने की कोशिश करना ज्यादा बड़ी गलती रही है। जैसे 1989 में हुई फूट के बारे में विश्लेषण करते हुए समाहार का दस्तावेज 'संगठन में फूट, इसकी प्रकृति, कारण और विश्लेषण' कहता है :

> " ... एक बहुत छोटा संगठन होने की सीमाओं के चलते 1987 के पहले यह संभव नहीं था कि राजनीतिक लाइन के सवाल पर अध्ययन-शोध और बुनियादी वर्गों के बीच जाकर उन्हें संगठित करने का काम, साथ-साथ, एक दूसरे के समान्तर चलाया जा सके। एक दूसरा कारण यह भी था कि जब आम कार्यदिशा पर ही सवाल उठा हुआ हो तो राजनीति के व्यावहारिक कामों को ठीक से कर पाना सम्भव नहीं हो सकता। जिस सीमित स्तर पर कुछ जन-कार्रवाइयां संगठित और संचालित की जा सकती थीं, वह भी एक छोटा संगठन होने के कारण सम्भव नहीं था। ..." [संगठन में फूट, इसकी प्रकृति, कारण और विश्लेषण, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.), सेक्रेटरी-रामनाथ, पृष्ठ-6, 1989]
>
> "... 1978 से लेकर आज तक हमारा काम मूलतः मध्यम वर्ग तक ही सीमित रहना हमारी इच्छा और आकांक्षा नहीं थी, बल्कि यह हमारे संगठन की सीमा थी और हमारे कामों की प्राथमिकता की मजबूरी का परिणाम था। ..." (वही, पृष्ठ-7)

यह बात पूर्णतया गलत है। 1978 में हमारा काम मूलतः मध्यम वर्ग तक ही सीमित नहीं था। खेत मजदूरों और गरीब किसानों के बीच हमारा कार्य था। हमने 1977 और 1979 में अपने आठ सथियों की शहादत दी थी। भोजपुर और रोहतास जिलों (इस समय के बक्सर और भभुआ जिलों) में हमारा जनाधार मध्यम वर्ग के बीच काम से कहीं बहुत ज्यादा था। वहां हमें नये सिरे से जनाधार नहीं बनाना था। हमने उस जनाधार को त्याग दिया। हम वहां से पलायन कर गये।

कोई भी कम्युनिस्ट संगठन, चाहे जितना भी छोटा क्यों न हो, अपने वर्ग–मजदूर वर्ग–के बीच अपना आधार बनाये बगैर सही अर्थों में कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन नहीं बना रह सकता। सिर्फ मजदूर वर्ग के भीतर अपना जनाधार बना लेने से भी कोई संगठन कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन नहीं हो जाता। हम जानते हैं कि मार्क्सवाद मजदूर वर्ग की विचारधारा है। यह मजदूर वर्ग में भी औद्योगिक सर्वहारा वर्ग की विचारधारा है। कोई भी कम्युनिस्ट संगठन अपने वर्ग को क्रांति के लिए बिना संगठित किये, उनमें से कम्युनिस्ट कतारों को बिना भर्ती किये कैसे अपना बोल्शेविकीकरण कर सकता है? हमारे संगठन के भीतर बार-बार होने वाली फूटों का एक महत्वपूर्ण कारण खुद अपने वर्ग के भीतर हमारे आधार का न होना रहा है।

ऐसा हो सकता है कि एक समय में आधार न हो। लेकिन कम्युनिस्ट संगठन की हमेशा अपना जनाधार सबसे पहले अपने वर्ग– मजदूर वर्ग– के बीच और उसमें भी संगठित औद्योगिक मजदूर वर्ग के बीच कायम करने की कोशिश होनी चाहिए। अपने आधार न होने को न्यायसंगत ठहराने के लिए उसे अपना आधार न बनाने के तर्क तक नहीं पहुंचाना चाहिए। हम लम्बे समय तक अपने वर्ग– औद्योगिक मजदूर वर्ग– के बीच अपने काम को प्राथमिकता में नहीं ला सके, यह हमारे निम्न-पूंजीवादी भटकाव की ही अभिव्यक्ति रही है।

यहां यह भी स्पष्ट हो लेना आवश्यक है कि सिर्फ औद्योगिक मजदूर वर्ग में जनाधार हो जाने से ही कोई संगठन कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन नहीं हो जाता। बल्कि वर्तमान के विश्वव्यापी विपर्यय के दौर में, कम्युनिस्ट आंदोलन के भीतर तरह-तरह की विजातीय प्रवृत्तियां दिखाई पड़ रही हैं और ऐसे समय जब दुनिया के पैमाने पर मजदूर आंदोलन पीछे हट रहा है, तब मजदूरों के बीच व्यापक जनाधार रखने के लिए तरह-तरह के अर्थवाद व सुधारवाद किये जा रहे हैं। कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को मजदूर वर्ग के बीच अपना जनाधार विस्तृत करने के लिए अर्थवादी, सुधारवादी लटकों-झटकों पर नहीं बल्कि कम्युनिस्ट क्रांतिकारी परिप्रेक्ष्य से काम करना होगा। आज के गैर-क्रांतिकारी दौर में मजदूरों के बीच क्रांतिकारी काम एक हद तक व्यापक मजदूरों से अलगाव बनाये रखेगा। कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को इसके लिए तैयार रहना चाहिए।

हमारे संगठन के भीतर भोजपुर-रोहतास के वर्ग-संघर्ष के अपने इलाके से पलायन करने के बाद लम्बे समय तक निम्न-पूंजीवादी तबकों में काम करने को न्यायसंगत ठहराने की एक गलत प्रवृत्ति रही है। यह न सिर्फ 1984 तक रही है बल्कि 1987 में पंजाब के एक संगठन क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी, भारत से एकता होने के बाद भी जारी रही है। बाद में हमने इस मुकम्मल लाइन का ही रूप दे दिया। कहा जाने लगा कि, बुनियादी वर्गों में पढ़े लिखे निम्न पूजीवादी वर्गों से अगुआ तत्वों की भर्ती कर एक ताकत हासिल कर लेनी चाहिए तभी बुनियादी वर्गों में जाया जा सकता है। साथ ही यह भी कि बुनियादी वर्गों के सघर्षों का समर्थन करने के लिए निम्न पूंजीवादी वर्गों में पहले से आधार होना आवश्यक है।

1987 में एकता सम्मेलन के बाद केन्द्रीय कमेटी एक बार फिर अस्तित्व में आयी। इस सम्मेलन ने अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर दस्तावेज पारित किया। इस दस्तावेज में हमने सही तरीके से विश्व के मौजूदा दौर को आर्थिक नव-उपनिवेशवाद का दौर चित्रित किया। कुछ खामियों के बावजूद यह दस्तावेज मूलतः सही है। इसी के साथ ही विचारधारा के सवाल पर हमने सही अवस्थिति अपनायी और राष्ट्रीय परिस्थितियों पर एक दस्तावेज पारित किया। इन बुनियादी दस्तावेजों के साथ-साथ कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के बीच एकता स्थापित करने सम्बन्धी एक प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव के अनुसार, कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को एक पार्टी में एकताबद्ध होने के लिए विचारधारात्मक एकता के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के आकलन और भारतीय क्रांति के कार्यक्रम के मुद्दे पर एकता होनी पूर्व शर्त है।

इसके पहले 1978 के स्थापना सम्मेलन में 'कम्युनिस्ट आंदोलन के हाल के इतिहास पर हमारा दृष्टिकोण' नामक दस्तावेज में पार्टी के पुनर्गठन के बारे में यह कहा गया था :

> "केवल भारतीय क्रांति के दरपेश तमाम महत्वपूर्ण और बुनियादी मुद्दों पर गम्भीर और समझौताविहीन विचारधारात्मक-राजनीतिक संघर्ष, समान रणकौशलात्मक लाइन पर आधारित समान क्रांतिकारी व्यवहार, अतीत के अनुभवों का गम्भीर समाहार और अपनी गलती के प्रति जिम्मेदार कम्युनिस्ट दृष्टिकोण ही सही क्रांतिकारी लाइन को तैयार करने और विकसित करने का रास्ता प्रशस्त कर सकता है जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा के आधार पर पार्टी के पुनर्गठन की पूर्वशर्त है।"
>
> **[Red star, No-1, June-1978, page-48, Organ of the CLI (M-L), अनुवाद हमारा]**

जहां 1978 में अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति और भारतीय क्रांति के कार्यक्रम के सवाल पर अभी किसी निष्कर्ष तक न पहुंचने के कारण इस सम्बन्ध में बात को साफ-साफ नहीं रखा जा सका था, वहीं अतीत के अनुभवों का गम्भीर समाहार और अपनी गलती के प्रति जिम्मेदार कम्युनिस्ट दृष्टिकोण के प्रश्न को पार्टी के पुनर्गठन की पूर्वशर्त के बतौर रखा गया था जिसे 1987 के एकता प्रस्ताव में छोड़ दिया गया। न सिर्फ 1987 के प्रस्ताव में इसे छोड़ दिया गया बल्कि व्यवहार में हमारे संगठन ने अपनी गलती के प्रति जिम्मेदार कम्युनिस्ट दृष्टिकोण को लम्बे समय तक नहीं अपनाया। हमने प्रस्ताव तो पारित किया, लेकिन वह बंद किताबों में कैद रहा। हमने 1978 के स्थापना सम्मेलन में पारित भारतीय क्रांति के कार्यक्रम को पूरी तरह बदल डाला। लेकिन न तो 1983 के निबंध में और न ही 1987 के एकता सम्मेलन में इस बदलाव के बारे में अपनी पूर्ववर्ती अवस्थितियों की आत्म-आलोचना की गई। जिस प्रकार 1983 में 1978 की विचारधारात्मक अवस्थितियों, यथा- 'तीन दुनिया के विभेदीकरण' वाले प्रतिक्रियावादी वर्ग-सहयोगी सिद्धान्त का समर्थन, सही कम्युनिस्टों को 'चार का गिरोह' कह कर उन्हें प्रतिक्रांतिकारी घोषित कर निंदा करना तथा मध्यमार्गी व अवसरवादी हुआ-कुओ-फेंग का समर्थन करना– की आत्म-आलोचना हमने की थी उसी प्रकार, 1978 के कार्यक्रम व क्रांति के मार्ग पर भी हमें आत्म-आलोचना करनी चाहिए थी। ऐसा न करके हमने जिम्मेदार कम्युनिस्ट दृष्टिकोण का परिचय नहीं दिया।

1985 में पंजाब के एक संगठन सांगठनिक कमेटी, क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी, भारत के साथ एकता प्रक्रिया शुरू हुई जो 1987 में एकता सम्मेलन के जरिये एकबद्ध संगठन के बतौर पूरी हुई। इस एकता के पहले पंजाब का यह

संगठन कई फूटों से गुजर चुका था। इस संगठन के भीतर पस्तहिम्मती और निराशा का माहौल था। इस संगठन का आधार सीमित मात्रा में औद्योगिक मजदूरों के बीच तथा राज्य बिजली कर्मचारियों के बीच था। इस एकता के बाद औद्योगिक मजदूरों के बीच काम को क्रमशः छोड़ दिया गया। इस तरह, एकताबद्ध संगठन-भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) का निम्न-पूंजीवादी आधार कमजोर होने के बजाय और मजबूत होता गया।

हमारे संगठन में मौजूद निम्न-पूंजीवादी माहौल, संगठन के गैर-लेनिनवादी तौर-तरीके, अतीत के अनुभवों का बिना समाहार किये स्वेच्छाचारी तरीके से कामों पर जोर देने और प्राथमिकतायें बदलने की प्रवृत्ति, षड़यंत्र-प्रतिषड़यंत्र का सिद्धान्त, व्यक्तिवादी विश्लेषण पद्धति और व्यक्तियों से प्रतिशोधात्मक तरीके से निपटने की प्रवृत्ति तथा अपनी गलती के प्रति जिम्मेदार कम्युनिस्ट दृष्टिकोण के अभाव के कारण हमारे संगठन को 1989 में दूसरी बार फूट का शिकार होना पड़ा।

सामान्यतया पार्टी की कमेटियों में विभिन्न मुद्दों पर संघर्ष होता रहता है। लेकिन हमारे पार्टी संगठन की केन्द्रीय कमेटी के भीतर दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष शुरू ही हुआ था तथा कोई निश्चित शक्ल भी नहीं ले पाया था कि फूट हो गयी। इस फूट को अंतिम तौर पर अंजाम रामनाथ-प्रकाश धड़े ने दिया। यह गलत था। इस धड़े को पार्टी ढांचे के भीतर ही संघर्ष करना चाहिए था। यदि विरोधी धड़ा रामनाथ धड़े के खिलाफ षड़यंत्र कर भी रहा था, तब भी रामनाथ धड़े द्वारा प्रतिषड़यंत्र का मार्ग चुनना गलत था। संगठन में होने वाले षड्यंत्रों का मुकाबला भी हमें सर्वहारा दृष्टिकोण पर खड़े होकर उनके विरुद्ध खुले विचारधारात्मक-राजनीतिक संघर्ष के रूप में करना चाहिए। 1989 में यह जानने के बावजूद कि विरोधी धड़े की विचारधारात्मक-राजनीतिक अवस्थितियां कमजोर और गलत हैं, रामनाथ-प्रकाश धड़े ने सर्वहारा साहस का परिचय नहीं दिया। इस संघर्ष में गौतम धड़े की विचारधारात्मक-राजनीतिक लाइन गैर सर्वहारा थी, जैसा कि 1990 के दशक (विशेष तौर पर 90 के दशक के उत्तरार्ध) में स्पष्टतः सामने आया। यह धड़ा न तो गुप्त पार्टी की अवधारणा पर कायम है और न ही पेशेवर क्रांतिकारी की अवधारणा पर। यह साम्राज्यवाद के बारे में स्पष्ट अवस्थिति नहीं लेता बल्कि उल्टे यह वर्ग-अंतर्विरोधों को धूमिल करने के लिए खुलेआम गैर सर्वहारा- उत्तर आधुनिकतावादी प्रस्थापनाएं प्रचारित कर रहा है। 1989 में संगठन के कार्यकर्ताओं के समक्ष बहुत ही उलझी हुई स्थिति थी, जिसमें एक ओर अपेक्षाकृत सही विचारधारात्मक-राजनीतिक अवस्थितियों वाले लोग सांगठनिक ढांचे को तोड़ रहे थे, तो दूसरी ओर सांगठनिक ढांचे के भीतर संघर्ष के निपटारे की बात करने वाले लोग पार्टी संगठन की प्राथमिक सदस्यता को विसर्जित करने के साथ-साथ राजनीतिक-विचारधारात्मक विच्युतियों के वाहक थे। उस वक्त कार्यकर्ताओं के लिए सही पक्ष का चुनाव और भी कठिन इसलिए था क्योंकि दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष अभी शुरू ही हुआ था। अतः दोनों कार्यदिशाओं के बीच भेद बहुत बारीक था।

रामनाथ की षड़यंत्र-प्रतिषड़यंत्र की थीसिस तथा विचारधारात्मक-राजनतिक संघर्षों की भ्रूण हत्या की उनकी प्रवृत्ति और ज्यादा निखर चुकी है। रामनाथ द्वारा नेतृत्व के लिए अधिकार सम्पन्न व कर्त्तव्य विहीन तौर-तरीके संस्थागत किये जा चुके हैं।

1989 की फूट पार्टी की निम्न राजनीतिक चेतना और नेतृत्व की भीरुता की अभिव्यक्ति है। ऐसी फूटों से बचने के लिए अन्य बातों के अलावा यह जरूरी है कि पार्टी के पास एक मुकम्मल ढांचा हो, विचारधारा और सांगठनिक उसूलों पर कार्यकर्ताओं की अच्छी पकड़ हो और नेतृत्व का सर्वहाराकरण भी इस हद तक हुआ हो कि वह पलायन के बजाय संघर्ष को विकसित करने में विश्वास रखता हो। ऐसा होने पर अंतः पार्टी संघर्षों को किसी एक धड़े की शर्मनाक शिकस्त तथा दूसरे की शौर्यपूर्ण विजय के बजाय वैज्ञानिक समाजवाद के अनुसार गलत या सही के निपटारे के बतौर लिया जायेगा। दूसरे शब्दों में निम्न-पूंजीवादी मान-सम्मान की जगह समग्र पार्टी का विकास नेतृत्व व कार्यकर्ताओं की मूल चिंता होनी चाहिए।

1989 की फूट वस्तुतः सर्वहारा कार्यदिशा और गैर सर्वहारा कार्यदिशा के बीच नहीं थी। यह दो निम्न-पूंजीवादी कार्यदिशाओं के बीच टकराव का परिणाम थी।

इस फूट के पहले हमारा पार्टी संगठन राजनीतिक तौर पर कम्युनिस्ट क्रांतिकारी खेमे में एक ताकत के बतौर माना जाने लगा था। लेकिन हमारे द्वैत ने– अपेक्षाकृत सही विचारधारात्मक व राजनीतिक अवस्थितियां और संगठन के निम्न पूंजीवादी आधार के बीच– बार-बार इसे फूट का शिकार बनाने में योगदान दिया। इस फूट ने षड़यंत्र (वास्तविक या आभासी) के विरुद्ध प्रतिषड़यंत्र करने का निम्न पूंजीवादी नुस्खा और पेश कर दिया। ऐसी गैर-जरूरी व अवांछित फूटों ने समूचे देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को एक सही कार्यदिशा के आधार पर एकजुट करने के प्रयासों में बाधा पहुंचायी।

1989 की फूट के बाद कामरेड गौतम (अरविंद) वाला धड़ा केन्द्रीय कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) के नाम से काम करता रहा। इस संगठन में सामाजिक-जनवादी भटकाव विशेष तौर पर 1990 के दशक के मध्य से स्पष्ट तौर पर आने लगे। इसने अपने संगठन के चौथे सम्मेलन (सन्-2000 में) के दस्तावेजों में समाजवाद के इतिहास पर कालिख पोतने की कोशिश की। इसने मार्क्सवाद और संशोधनवाद के बीच स्पष्ट विभाजक रेखा को धूमिल किया। साम्राज्यवाद को एक प्रभुत्वकारी व्यवस्था के बजाय तीसरी दुनिया के पूंजीवादी विकास में मददगार के बतौर चित्रित किया। इसने विकसित पूंजीवादी देशों में वर्ग अंतर्विरोध के तीखे होने के बजाय उनके धूमिल पड़ने की गैर मार्क्सवादी धारणा की वकालत की। इसने क्रांतिकारी समान्तर सत्ता के नाम से एक सुधारवादी अवधारणा पेश की। इसने पार्टी की वर्गीय संरचना के बारे में निम्न-पूंजीवादी दृष्टिकोण पेश किया जिसमें कहा गया कि सर्वहारा वर्ग की पार्टी होने का मतलब यह नहीं है कि उसमें सर्वहारा वर्ग के लोग सशरीर मौजूद हों। इसके स्थान पर इसने आगे बढ़े हुए तत्वों (इसका अर्थ पढ़े-लिखे लोगों से है) से बनी पार्टी की अवधारणा पेश की। इसकी इस अवधारणा में त्याग, बलिदान और समर्पण जैसे गुणों पर जोर न देने की वकालत की गयी। इसने भूमिगत पार्टी की अवधारणा को महज तकनीकी प्रश्न बना दिया तथा खुली पार्टी की वकालत की। पेशेवर क्रांतिकारियों से बनी पार्टी की अवधारणा को इसने रद्द किया। इसके अलावा, इसने सर्वहारा वर्ग के वर्ग-संघर्ष के बजाय नये सामाजिक आंदोलनों पर जोर दिया और उनको सर्वहारा वर्ग के वर्ग-संघर्ष का ही एक संश्लिष्ट रूप बताया। इस संगठन ने दलित और नारी आंदोलन की बुर्जुआ अवधारणा की हिमायत की

अपने इन व्यापक सामाजिक-जनवादी भटकावों के कारण, यह संगठन अपने भीतर की एकता नहीं कायम रख सका। इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा नव-जनवादी क्रांति की कार्यदिशा की ओर पुनः अवसरवादी ढंग से लौट गया। बाकी बचा हुआ हिस्सा निष्क्रिय उग्रपरिवर्तनवाद का शिकार है तथा छिटपुट वर्गेतर कार्यवाहियां करने में मशगूल है।

हमारे संगठन के भीतर निम्न-पूंजीवादी भटकाव की एक परिणति इस संगठन के सामाजिक-जनवाद की ओर जाने में रही है।

षड़यंत्र और प्रतिषड़यंत्र के निम्न-पूंजीवादी नुस्खे का और भौंड़े तरीके से इस्तेमाल 1990 की फूट में प्रकाश ने किया। प्रकाश धड़े ने पार्टी संगठनकर्ता कमेटी की दो माह की बैठक में कहीं कोई मतभेद दर्ज नहीं किया और इस बैठक के बाद फूट की घोषणा कर दी यद्यपि संगठनकर्ता कमेटी के भीतर यह धड़ा सशक्त अल्पमत में था। यह करते हुए प्रकाश धड़े ने बेशर्मी के साथ इसे 1989 की पुनरावृत्ति घोषित किया। प्रकाश धड़े का यह भीरुता भरा कदम था। यदि ऐसे कदमों को जायज ठहराया जाय तो कोई भी मतभेद गिनाते हुए एवं षड्यंत्र का आरोप लगाते हुए कभी भी संगठन से अलग होने को सही ठहरा सकता है।

प्रकाश धड़े ने 1990 की फूट के लिए जिम्मेदार रामनाथ की निम्न-पूंजीवादी सांगठनिक लाइन को बताया। इसके अनुसार, रामनाथ की निम्न-पूंजीवादी सांगठनिक लाइन के विरुद्ध प्रकाश 1986 से ही संघर्ष चला रहे थे, कि 1989 की फूट में रामनाथ ने प्रकाश की अवस्थिति अपना ली थी, और कि 1986 से ही रामनाथ, गौतम के साथ गुट बनाकर प्रकाश की सही कार्यदिशा के विरुद्ध छल-नियोजन तथा जोड़-तोड़ कर रहे थे।

यदि प्रकाश की इन बातों को तर्क के तौर पर मान लिया जाय तो "1990 की फूट के कारणों का विश्लेषण और समाहार" करने के बाद प्रकाश धड़े को सही सांगठनिक लाइन के आधार पर अपने संगठन क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत को खड़ा और विकसित करना चाहिए था। अगर यह धड़ा, रामनाथ की निम्न पूंजीवादी सांगठनिक लाइन के कारण अपनी सर्वहारा सांगठनिक लाइन नहीं स्थापित कर पा रहा था और रामनाथ के छल-नियोजन व जोड़-तोड़ के कारण उस संगठन के भीतर संघर्ष करने की कोई गुंजाइश नहीं रह गयी थी तो उसके बाद तो उसे सर्वहारा वर्ग की सांगठनिक लाइन को लागू करने में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिये थी। लेकिन सर्वहारा वर्ग की सांगठनिक लाइन का प्रवक्ता यह धड़ा उसके बाद बीते 16 सालों में अपना स्थापना सम्मेलन तक नहीं कर सका।

वास्तविकता में क्या हुआ? भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) के निम्न-पूंजीवादी भटकाव का ठीकरा रामनाथ पर फोड़ने के बाद प्रकाश के नेतृत्व में बनी क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत, सर्वहारा वर्ग को संगठित करने की बात तो दूर, पूंजीवादी प्रकाशन संस्थानों की प्रतिस्पर्धा में एक प्रकाशन केन्द्र बन गयी। सर्वहारा वर्ग के वर्ग-संघर्ष को आगे बढ़ाने की मुहिम का बिगुल फूंकने के बाद तरह-तरह के कागजी संगठन बनाने लगी। सर्वहारा वर्ग के प्रबोधन और पुनर्जागरण के कुहासे से खुद को ढ़कने में यह इतना मशगूल हो गयी कि इसे अपने '1990 की फूट के कारणों का विश्लेषण और समाहार' की सुध ही नहीं रही। पार्टी-गठन और पार्टी-निर्माण की तमाम बातें सिर्फ कागज में लिखी रह गयीं। हालांकि इस दस्तावेज में मार्क्सवादी-लेनिनवादी आंदोलन के अंदर निम्न-पूंजीवादी सांगठनिक लाइन के पनपने और विकसित होने के संदर्भ में कुछ सही बातें कही गयी हैं लेकिन क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत की ये सारी बातें दूसरे

संगठनों के लिए हैं, ये उस पर लागू नहीं होतीं। 'समाहार' में पार्टी संगठन को संचालित करने सम्बन्धी बातें ठीक लिखी गयी हैं लेकिन उन पर यह संगठन एक भी दिन नहीं चला। न तो यह संगठन सर्वहारा वर्ग और अन्य मित्र वर्गों के जन संगठन बनाने की तरफ आगे बढ़ा और न ही इसने अपने पार्टी संगठन को उन उसूलों के आधार पर खड़ा किया जिसकी हिमायत अपने समाहार के दस्तावेज में इसने की थी।

इस संगठन ने '1990 की फूट के कारणों का विश्लेषण और समाहार' के अलावा कोई भी पार्टी दस्तावेज नहीं जारी किया। पहले यह अखिल भारतीय पैमाने पर एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन को केन्द्रीय कार्यभार के बतौर पेश करता था। लेकिन एक दशक बीतते-बीतते इसने कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर के विघटन की घोषणा कर दी। इसके अनुसार, भारत का अब तक का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर मूलतः और मुख्यतः विघटित हो चुका है। इसलिए कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों के बीच राजनीतिक वाद-विवाद के जरिये एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की संभावना यह नहीं देखता। न तो इसने अपनी इस अवस्थिति की औपचारिक तौर पर क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग भारत, की तरफ से घोषणा की और न ही इस मामले में अपनी पहले वाली अवस्थिति की इसने आत्म-आलोचना प्रस्तुत की। इतना कर देने के बाद यह स्वाभाविक निष्कर्ष निकलता है कि कोई जिम्मेदार कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन अब पार्टी-निर्माण के काम को और ज्यादा शिद्दत के साथ हाथ में लेगा क्योंकि यदि देश के पैमाने पर सिर्फ उसे ही पार्टी-गठन के कार्यभार को अंजाम देना है तो उसका दायित्व बहुत बढ़ जाता है। लेकिन क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत की अस्थायी कोर इस काम को हाथ में नहीं लेती। वह इसके स्थान पर प्रकाशन संस्थान चलाने और 'सर्वहारा प्रबोधन व पुनर्जागरण' के फैशन- परस्त और सुविधा-परस्त कार्य पर अपनी ऊर्जा लगाये हुए है।

इस संगठन के समाहार दस्तावेज में अपनी गलतियों के प्रति आत्म-आलोचना का जिम्मेदार कम्युनिस्ट दृष्टिकोण गायब है। यह जो भी आत्म-आलोचना करता है वह वस्तुतः आत्म प्रशंसा है। यह 80 के दशक के शुरू से संगठन में मौजूद निष्क्रिय उग्र परिवर्तनवादी कार्यदिशा के बारे में चुप्पी साधे हुए है।

इस संगठन द्वारा लागू की जा रही कार्यदिशा का परिणाम यह है कि इससे एक-एक करके लोग हटते गये या निकाले जाते रहे और अब व्यवहारतः प्रकाशन संस्थान और किताबों की दुकान चलाना ही इसका मूल काम बन गया है।

निम्न-पूंजीवादी दृष्टिकोण से किये गये संघर्ष (या पलायन) की यह भी एक तार्किक परिणति थी। ऐसे लोग महज प्रस्ताव पारित करने वाले (Resolutionaries) होते हैं वे क्रांतिकारी (Revolutionaries) नहीं होते। प्रकाश वाला धड़ा रामनाथ में शिवदास घोष की परकाया प्रवेश की चर्चा करते हुए उन्हें निष्क्रिय उग्रपरिवर्तनवाद का वाहक कहता है। लेकिन जिस समय वह यह आरोप लगा रहा था उसी समय निष्क्रिय उग्रपरिवर्तनवाद वाली शिवदास घोष की आत्मा और ज्यादा भौंड़े रूप में प्रकाश वाले धड़े के भीतर प्रवेश कर चुकी थी।

1995-98 के दौरान भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) में दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष एक हद तक विकसित हुआ, पर इस संघर्ष की परिणति भी गलत कार्यदिशा के विरुद्ध सही कार्यदिशा के स्थापित होने और इसके आधार पर उच्च स्तर की एकता कायम होने के बजाय फूट में हुई। 1995-98 के दौर के दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष का एक सकारात्मक पक्ष यह है कि इस दौर में मतभेद उभर कर सामने आये, अंतः पार्टी बहस को सर्वोच्च कमेटी के बाहर, सम्मेलन के जरिये पार्टी कार्यकर्ताओं के एक बड़े दायरे तक ले जाया गया और दो कार्यदिशाओं के बीच संघर्ष विकसित हुआ। परन्तु कमजोरी यह रही कि जब मतभेद सांगठनिक कार्यदिशा, विचारधारा, राजनीति हर जगह चिह्नित होने लगे, तभी 1998 में रामनाथ धड़े ने पलायन का रास्ता चुना और सामान्य परिषद का गठन करके तथा 1998 सम्मेलन का बहिष्कार करके संगठन में फूट को अंजाम दे दिया।

1995-98 के दौरान का. रामनाथ की पार्टी कार्यशैली व पार्टी निर्माण सम्बन्धी व्यक्ति-केन्द्रित विश्लेषण पद्धति के विरुद्ध संघर्ष किया गया। यह ऐसी विश्लेषण पद्धति है जो परिस्थितियों-सामाजिक व ऐतिहासिक–व विचारधारात्मक जड़ों से अलग काट कर व्यक्तियों का मूल्यांकन करने पर केन्द्रित करती है। यह पार्टी संगठन की आम दिशा व कार्यशैली का विश्लेषण करने और उसके अंतर्गत व्यक्तियों की गलतियों-खामियों और कमजोरियों को अवस्थित नहीं करती। बल्कि पार्टी संगठन में आये ठहराव के लिए सिर्फ चंद व्यक्तियों की व्यक्तिगत कमजोरियों और गलतियों को जिम्मेदार मानती है। ऐसा ही गैर-द्वन्द्ववादी व गैर-भौतिकवादी दृष्टिकोण यह अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के नेताओं के संदर्भ में अपनाती है और उनका व्यक्ति केन्द्रित व मनोविश्लेषणात्मक मूल्यांकन करती है। माओ के बारे में का. रामनाथ की यह टिप्पणी कि वे एशियाई मूल के थे, इसलिए उन्होंने ख्रुश्चेवी संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष करने में समझौतापरस्ती दिखायी, गैर-मार्क्सवादी विश्लेषण पद्धति का एक नमूना है। वे इस मामले में स्तालिन को भी नहीं बख्सते। स्तालिन का मूल्यांकन करते हुए वे कहते हैं कि स्तालिन रूस की अंदरूनी समस्या को अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की समस्या बना देते थे। इस तरह की विश्लेषण पद्धति का. रामनाथ व उनके साथ खड़े उस समय के केन्द्रीय संगठनकर्ता कमेटी के

साथियों को गैर-मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाने तथा गैर जिम्मेदार स्वछंद बुद्धिजीवी के बतौर आचरण करने की ओर ले जाती है। अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के नेताओं और पार्टी संगठन के भीतर की समस्याओं के लिए वे समान रूप से व्यक्ति केन्द्रित विश्लेषण करते हैं, लेकिन ऐसे विश्लेषण से वे अपने आप को अलग रखते हैं। यह दोहरा मानदंड उनके पाखण्ड को उजागर करता है। 1995-98 के संघर्ष के दौरान पार्टी समस्याओं व पार्टी इतिहास के सार संकलन में इस भाववादी दृष्टिकोण को अपनाने के विरुद्ध संघर्ष किया गया।

पार्टी कोर के अभाव होने की समस्या को भी का. रामनाथ भाववादी दृष्टिकोण से देखते हैं। लम्बे समय से संगठन के अंदर सक्षम पेशेवर क्रांतिकारियों की एक पार्टी कोर के अभाव का समाधान वे अपने सिवाय नेतृत्वकारी साथियों की निजी कमजोरियों, गलतियों और निम्न-पूंजीवादी दृष्टिकोण के विरुद्ध समझौता विहीन संघर्ष में देखते हैं। वे इसके लिए साथियों की व्यक्तिगत आलोचना निर्मम होकर करते हैं, लेकिन उनकी यह आलोचना पार्टी संगठन की आम दिशा और जनता के बीच जन संगठनों के माध्यम से जन समुदाय की समस्याओं के लिए संघर्षों से काट कर होती है। वे जनता के प्रति जवाबदेह होने की सम्भावना से बचते रहे हैं और इसलिए औपचारिक जन संगठनों के गठन से येन-केन प्रकारेण बचते रहे हैं।

व्यक्ति-केन्द्रित भाववादी विश्लेषण पद्धति, पार्टी कोर के अभाव की समस्या को हल करने की उनकी गैर द्वन्द्ववादी-गैर भौतिकवादी पद्धति, स्वेच्छाचारी सांगठनिक आचरण और 80 के दशक के शुरू से चली आ रही निष्क्रिय उग्र परिवर्तनवादी कार्यदिशा ने संगठन को निम्न-पूंजीवादी भटकावों से ग्रस्त कर दिया था। 1995-98 के दौरान इनके विरुद्ध संघर्ष किया गया। यदि रामनाथ धड़े द्वारा 1998 में पार्टी के औपचारिक निकाय को भंग करके और उसके स्थान पर ढीला-ढाला सामान्य परिषद तथा सलाहकार के गैर-लेनिनवादी ढांचे को नहीं कायम किया जाता तथा रामनाथ धड़े द्वारा 1998 के सम्मेलन का बहिष्कार नहीं किया जाता तो यह संघर्ष और ज्यादा अच्छी तरह चलता तथा इस बात की सम्भावना बनती थी कि एक उच्च स्तर की एकता कायम होकर एक सही राजनीतिक-सांगठनिक अवस्थिति पर समूचा संगठन खड़ा होता।

लेकिन हमारे संगठन में मौजूद निम्न-पूंजीवादी सांगठनिक कार्यशैली इसकी इजाजत नहीं देती थी। इसके पहले की फूटों में मतभेद प्रकट होते ही फूट हो जाती थी या मतभेदों का हवाला देकर एक हिस्सा फूट घोषित कर देता था। 1980, 1989 और 1990 की फूटें वस्तुतः निम्न-पूंजीवादी रुझानों के बीच टकरावों की फूटें थीं।

1998 की फूट इस अर्थ में भिन्न थी कि इसने मतभेदों को उजागर किया और पार्टी संगठन की गलत कार्यशैली, गलत सांगठनिक कार्यदिशा तथा विचारधारात्मक -राजनीतिक विच्युतियों के विरुद्ध 1995-98 के दौरान संघर्ष में सही अवस्थितियों पर हमें खड़ा किया।

इन्हीं सही अवस्थितियों पर खड़े होते हुए हमने अपने पार्टी संगठन का एक औपचारिक ढांचा खड़ा किया। पार्टी संगठन को संचालित करने के लिए बाकायदा लेनिनवादी उसूलों पर आधारित सांगठनिक प्रणाली विकसित की। पार्टी नेतृत्व और पार्टी कार्यकर्ताओं को जवाबदेह बनाने की एक प्रणाली लागू की। इसी के साथ ही औपचारिक जनसंगठनों को खड़ा करने तथा उनको जनता के प्रति जवाबदेह बनाने की प्रक्रिया शुरू की।

हमने अतीत के अपने कामों का समाहार करने तथा अपनी गलतियों के प्रति जिम्मेदार कम्युनिस्ट दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया। इसी के साथ ही, हमने अपने वर्ग– औद्योगिक मजदूर वर्ग– के बीच कामों में अपने को केन्द्रित किया।

1980 के सम्मेलन के तुरंत बाद भारत की कम्युनिस्ट लीग (माले) के एक धड़े के नेता कामरेड अशोक ने पहल लेकर सम्पर्क किया। कामरेड अशोक हमसे प्रत्यक्षतः सम्पर्क के पूर्व ही 1995-98 के संघर्ष के दस्तावेज प्राप्त कर हमारी विचारधारात्मक-राजनीतिक-सांगठनिक अवस्थितियों से वाकिफ हो चुके थे और उन्हें सही मानते थे। वार्ताओं के दौरान एक दूसरे की अवस्थितियों का और आदान प्रदान हुआ। औद्योगिक मजदूरों में पार्टी के काम को केन्द्रित करने का हमारा निर्णय व गम्भीरता एक अतिरिक्त सकारात्मक कारक था, जिसने एकता का रास्ता साफ किया। एक दूसरे की गलतियों, कमियों को चिह्नित करने तथा आलोचना-आत्मालोचना करने के उपरान्त दोनों धड़ो में अक्टूबर 1998 में एकता हुयी। नये संगठन का नाम पुनर्गठन कमेटी, भाकली (माले) ही जारी रखा गया। उस समय एक प्रश्न पर दोनों धड़ों में मतैक्य नहीं था। वह प्रश्न था- 1989 की फूट का मूल्यांकन। इसके सम्बन्ध में तय किया गया कि एकीकृत संगठन के दायरे में इन्हें हल कर लिया जायेगा। 2002 आते-आते उन मुद्दों पर भी एकीकृत अवस्थिति हासिल कर ली गयी। इस दस्तावेज में 1989 की फूट का जो समाहार प्रस्तुत है वो हमारी एकीकृत अवस्थिति है।

1998 के उत्तरार्द्ध की यह एकता साबित करती है कि पार्टी इतिहास के कुछ पेचीदा व अनसुलझे मुद्दों को तात्कालिक तौर पर अनसुलझा छोड़कर भी एकता स्थापित की जा सकती है यदि मूल विचारधारा, कार्यक्रम, रणकौशल,

सांगठनिक लाइन (ढ़ांचा व कार्यशैली समेत) पर एकता मौजूद हो और तात्कालिक/दूरगामी कार्यभारों व प्राथमिकताओं पर पूर्ण सहमति हो। साझा व्यवहार ऐसे पेचीदा व अनसुलझे मुद्दों को सुलझाने का आधार तैयार कर देता है। बल्कि साझे व्यवहार में निर्मित आवयविक एकता वह आधार मुहैय्या कराती है जिसमें दोनों पक्ष अपने अतीत के ऐसे पेचीदा प्रश्नों के प्रति ज्यादा वस्तुनिष्ठ रुख अपना सकते हैं तथा अपनी-अपनी गलतियों के प्रति ज्यादा निर्मम हो सकते है। अतः ये मांग करना कि दो संगठनों एकता से पहले पार्टी इतिहास के सभी प्रश्न सुलझा लिए जायें, ठीक कार्यपद्धति नहीं है क्योंकि पार्टी इतिहास से सम्बन्धित कई मामले ऐसे हो सकते हैं जो अपने समाधान के लिए एक स्तर की एकता की मांग करते हैं और यह एकता वार्ताओं के समय अस्तित्वमान नहीं होती। यह तभी अस्तित्वमान हो सकती है जब साझा व्यवहार हो रहा हो।

दूसरी तरफ, का. रामनाथ के नेतृत्व वाले धड़े ने संघर्ष के दौरान जो गैर-मार्क्सवादी अवस्थितियां अपनायी थीं उन पर वह और आगे बढ़ता गया।

सांगठनिक कार्यदिशा विकसित करने की चुनौती को ठंडे बस्ते में डाल चुकी सामान्य परिषद और का. रामनाथ तदर्थवाद, अनौपचारिकतावाद, स्वेच्छाचारिता और भाववादी विश्लेषण पद्धति पर अभी भी यात्रा जारी रखे हुए हैं।

का. रामनाथ के नेतृत्व में आज भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) (सामान्य परिषद) शेष आंदोलन से कटी हुई एक 'मार्क्सवादी' मठ में तब्दील होती जा रही है, जो न तो अपनी बदली हुई विचारधारात्मक-राजनीतिक अवस्थितियों को सीधे लिखित तौर पर अपने कार्यकर्ताओं और शेष आंदोलन के समक्ष रखने का साहस जुटा पा रही है, और न ही बुनियादी वर्गों के बीच सीधे जाने का। न ही विभिन्न वर्गों-तबकों के औपचारिक संगठनों का निर्माण करके आम जनता के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित कर पा रही है, न ही लगातार असफलताओं के बावजूद 'पार्टी-निर्माण' की अपनी गैर-मार्क्सवादी समझ का ही सार संकलन करने का साहस जुटा पा रही है।

सामान्य परिषद की सांगठनिक कार्यदिशा के चार मुख्य बिंदु हैं :

1- मजदूर वर्ग में पार्टी संगठन के काम को केन्द्रित करने से इस या उस बहाने बचना।

2- अनौपचारिक स्वेच्छाचारी सांगठनिक कार्यशैली।

3- व्यक्ति केन्द्रित विश्लेषण पद्धति, और

4- अंतः पार्टी मतभेदों के पैदा होने पर राजनीति को नहीं बल्कि संगठन को कमान में रखना तथा विरोधी पक्ष को अलगाव में डालने की कोशिश करना।

सामान्य परिषद, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) की कार्यशैली व सांगठनिक लाइन के अलावा विचारधारात्मक-राजनीतिक भटकाव भी क्रमशः उजागार होते जा रहे हैं। ये भटकाव न सिर्फ व्यक्ति-केन्द्रित मूल्यांकनों में हैं बल्कि लेनिन की साम्राज्यवाद की थीसिस की गलत व्याख्या में भी मौजूद हैं। साम्राज्यवादी देशों में मालिकों द्वारा अभिजात मजदूरों को घूस देकर भ्रष्ट करने की लेनिन की थीसिस को अनदेखा करने के साथ-साथ सामान्य परिषद, साम्राज्यवाद व वैश्वीकरण के अंतर्सम्बंधों की भी गलत प्रस्तुति करती है। सामान्य परिषद उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद को, पूंजीवाद के विभिन्न चरणों में, वैश्वीकरण का माध्यम मानने के बजाय उसे उसके आगे बढ़ने में बाधक मानती है। विचारधारात्मक स्तर पर इस घड़े की दूसरी समस्या यह है कि यह पूंजीवादी क्रांतियों व उनके जरिये आये पूंजीवाद को उससे कहीं ज्यादा मुक्तिदायी मानता है जितना पूंजीवाद वास्तविकता में होता है। क्रांतियों के जरिये सुदृढ़ हुए पूंजीवाद के बारे में अक्सर इस धड़े की बातों में पूंजीवाद का मूल शोषणकारी चरित्र कमजोर हो जाता है और उसे उन समस्याओं को हल करने के काबिल मान लिया जता है जिन्हें इतिहास में केवल सर्वहारा के नेतृत्व में हुयी क्रांतियों ने हल किया या हल करने का प्रयास किया। इसी तरह, पूंजीवाद के अंदर सेवा क्षेत्र के विकास की असीम सम्भावना देखने में भी ये भटकाव प्रतिबिंबित होते हैं। भारतीय पूंजीपति वर्ग को साम्राज्यवाद के 'कनिष्ठ साझेदार' के स्थान पर 'शत्रु सहयोगी' (Collaborationist) कहने में गैर जिम्मेदार दृष्टिकोण के अलावा एक भटकाव भी मौजूद है जो पूंजीपति वर्ग व धनी किसानों के एक हिस्से के भारतीय क्रांति में रणनीतिक संश्रयकारी बनने की सम्भावना देखता है। ये सोच आगे बढ़ कर तीसरी दुनिया के शासकों का मूल्यांकन राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से करने में व्यक्त होती है।

इन विचारधारात्मक-राजनीतिक भटकावों और पार्टी की गलत कार्यशैली के कारण, 1998 में संगठन में फूट डालने के बाद सामान्य परिषद लगातार विघटन का शिकार रही है। इसके शीर्ष निकाय से लेकर नीचे तक इसके कार्यकर्ता समय-समय पर इसका साथ छोड़ते रहे हैं।

* * * *

इतनी सारी विच्युतियों-भटकावों तथा कई गैर-जरूरी व अवांछित फूटों के बावजूद हमारा पार्टी संगठन अपना अस्तित्व बनाये रख सका है और देश के कम्युनिस्ट क्रातिकारी आंदोलन में सैद्धान्तिक स्तर पर योगदान करता रहा है, तो इसके निश्चित सकारात्मक कारण हैं। हमें इस पक्ष को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

हमारे पार्टी संगठन ने विचारधारात्मक स्तर पर शुरू में कमजोरी दिखाई, लेकिन मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा पर सही अवस्थिति अपनाने के बाद समूचे खेमे के भीतर विचारधारा के प्रश्न पर सर्वाधिक दृढ़ता के साथ खड़े रहने वाले संगठनों में एक हैं। हमने माओ-विचारधारा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक-महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के सबकों-पर दृढ़ता से अवस्थिति अपनायी तथा इस बात को रद्द किया कि नव-जनवादी क्रांति की अवधारणा माओ-विचारधारा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। क्रांति की मंजिल का प्रश्न किसी भी देश की सामाजिक-आर्थिक विकास की अवस्था से तय होता है। यह सर्वहारा वर्ग की पार्टी के लिए कार्यक्रम का प्रश्न है न कि विचारधारा का। हम माओ-विचारधारा की जड़सूत्रवादी व्याख्या को रद्द करके उसके विचारधारात्मक सारतत्व पर दृढ़ता से कायम रहे और इसकी हिफाजत करने के लिए संघर्ष किया।

हमारे पार्टी संगठन ने 1987 के एकता सम्मेलन के 'अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के आकलन' में मूलतः एक सही विश्लेषण पेश किया। इसने 60 के दशक के बाद विश्व परिस्थितियों में आये महत्वपूर्ण बदलावों को चिह्नित किया तथा उससे यह सही निष्कर्ष निकाला कि आज की विश्व व्यवस्था आर्थिक नव-उपनिवेशवादी व्यवस्था है। साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांतियों के युग के अंतर्गत यह उपनिवेशवाद-अर्द्ध उपनिवेशवाद तथा नव-उपनिवेशवाद के चरणों से गुजरकर अस्तित्व में आयी है। इस आकलन के आधार पर हमने विश्व व्यापी पैमाने पर राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों के आमतौर पर पूरा होने को संज्ञान में लिया। पहले के उपनिवेशों–अर्द्ध-उपनिवेशों में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की बदौलत देशी शासक वर्ग के सत्ता में आने और मजबूत होने के तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमने यह सही तौर पर चित्रित किया कि इन देशों के शासक वर्ग अब साम्राज्यवाद के कनिष्ठ साझेदार बन गये हैं। अब ये अपने-अपने देशों के मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता के शत्रु हो गये हैं। अतः इनका कोई भी हिस्सा क्रांति में रणनीतिक संश्रयकारी नहीं होगा। साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांतियों के युग के अंतर्गत आर्थिक नव-उपनिवेशवाद के चरण की विशेषता हमने यह बतायी कि साम्राज्यवाद द्वारा इनके लूट का तरीका प्रत्यक्ष राजनीतिक शासन (उपनिवेश) या परोक्ष राजनीतिक नियंत्रण (अर्द्ध उपनिवेश व नव-उपनिवेश) नहीं है, बल्कि आर्थिक है। लेकिन शोषण का रूप मूलतः आर्थिक होने के बावजूद साम्राज्यवाद पहले के उपनिवेशों-अर्द्ध-उपनिवेशों-नव उपनिवेशों में राजनीतिक और सामरिक तरीकों का इस्तेमाल करने का लगातार प्रयास करता है। हमने अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति के आकलन के सम्बन्ध में अपने देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में व्याप्त उस जड़सूत्रवाद को रद्द किया जो यह मानता है कि वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति वही है जो 1960 के दशक में थी, जिसे अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के समक्ष 'महान बहस' के दौरान चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने पेश किया था। इसी प्रकार, हमने साम्राज्यवाद की नामौजूदगी या उसके प्रभावहीन होने की संशोधनवादी अवधारणा को रद्द किया। हमने यह साफ तौर पर कहा कि वर्तमान विश्व के आर्थिक नव-उपनिवेशवाद के चरण में दुनिया के क्षेत्रीय बंटवारे का सवाल नहीं रह गया है, क्योंकि दुनिया उपनिवेशवाद के चरण से आगे बढ़ चुकी है। यह अब केवल प्रभाव क्षेत्र कायम करने तक सीमित रह गया है।

हमारे पार्टी संगठन ने भारतीय क्रांति के कार्यक्रम के प्रश्न की चुनौती को स्वीकार करके उसे हल करने की दिशा में कदम उठाया। हमने मौजूदा भारतीय क्रांति की मंजिल को समाजवादी क्रांति की मंजिल के रूप में निरूपित किया। हमने यह स्थापित किया कि बगैर जनवादी क्रांति सम्पन्न हुए भारतीय पूंजीपति वर्ग ने जनवादी क्रांति के कार्यभारों को क्रमिक विकास के रास्ते से मुख्यतः पूरा कर लिया है। बाकी बचे-खुचे कार्यभारों को समाजवादी क्रांति उप-उत्पाद के बतौर पूरा करेगी। हमने इस जड़सूत्रवादी पहुंच का खण्डन किया कि जनवादी कार्यभार सिर्फ जनवादी क्रांति के जरिये ही पूरे किये जा सकते हैं। हमने भारत को अर्द्ध-औपनिवेशिक-अर्द्ध-सामन्ती समाज व्यवस्था के बतौर चित्रित करने तथा इसके आधार पर नव-जनवादी क्रांति की मंजिल निर्धारित करने को रद्द किया। इसी प्रकार, दलाल पूंजीपति वर्ग की मौजूदगी तथा दलाल पूंजीपति वर्ग और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के बीच विभाजन को हमने रद्द किया और बताया कि यह भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों द्वारा चीन के समाज के वर्ग विश्लेषण के अंधानुकरण का परिणाम है। हमने भारतीय क्रांति में पूंजीपतियों के किसी भी हिस्से की रणनीतिक हिस्सेदारी की संभावना को खारिज किया। हमने यह बताया कि भारतीय समाज में पूंजी और श्रम के बीच अंतर्विरोध प्रधान अंतर्विरोध बन गया है। इसी प्रकार हमने भारतीय क्रांति के रास्ते के बतौर दीर्घकालीन लोक-युद्ध के रास्ते को रद्द किया तथा आम बगावत के रास्ते को सूत्रित किया। हमने कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के बीच इसे स्थापित करने के लिए संघर्ष किया।

हमारे पार्टी संगठन की यह भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है कि हमने कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के समक्ष मौजूद चुनौतियों को सीधे स्वीकार करने का साहस दिखाया। हमारी समझ में यह जैसे ही आ गया कि विचारधारा, भारतीय क्रांति का कार्यक्रम और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के आकलन के सवाल कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के भीतर फूट-विग्रह के लिए मुख्यतया जिम्मेदार हैं तो हमने सीधे इन्हें संबोधित किया। हालांकि इनको संबोधित करने में हमने एकांगीपन का परिचय दिया, जिससे हमारे अंदर अलग-अलग विच्युतियां और भटकाव पैदा हुए जिनका विश्लेषण हम पहले ही कर चुके हैं। फिर भी, यह हमारी उपलब्धि थी कि हम चुनौतियों से सीधे टकराये और उनसे निष्कर्ष निकाले। कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के अधिकांश संगठन अब भी इन चुनौतियों को सीधे स्वीकार करने से कतरा रहे हैं। वे किन्तु-परन्तु लगाकर तथ्यों को स्वीकार करते हैं, लेकिन बुनियादी सवालों से कतरा रहे हैं।

हमारी एक अन्य उपलब्धि यह भी रही है कि हम एकदम नये अछूते इलाकों में जाकर तथा वहां अपने उपलब्ध संसाधन लगाकर राजनीतिक काम करने व उसे विकसित करने में सफल रहे हैं। हम एकदम नये इलाके में जाकर कामों को योजनाबद्ध शुरूआत करके उसमें सफलता भी प्राप्त करते रहे हैं। हमने औद्योगिक मजदूरों के बीच भी कामों की योजनाबद्ध शुरूआत की और इसमें प्रारम्भिक सफलता हासिल की। जबकि नव जनवादी क्रांति की मंजिल मानने वाले अधिकांश संगठन सैद्धान्तिक तौर पर मजदूर वर्ग के बीच कामों में जोर बढ़ाने की बात करने के बावजूद इस चुनौती को स्वीकार करने व इससे जूझने से कतराते रहे हैं। ये संगठन अपने संसाधनों के पर्याप्त हिस्से को मजदूर वर्ग के बीच लगाने से किनाराकशी करते हैं। कुछ संगठन तो अपने उपलब्ध संसाधनों को किसानों के बीच भी न लगाकर उन्हीं स्थानों (विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों) में लगाते रहे हैं, जहां अपेक्षाकृत ज्यादा आसानी से जन गोलबंदी की संम्भावनायें हैं। इस अर्थ में, हमारे देश का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन का बड़ा हिस्सा स्वतः स्फूर्तता का शिकार है।

कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के एक हिस्से में भी यह आम स्थापित बात हो गयी है कि हमारे संगठन के कार्यकर्ता विचारधारात्मक-राजनीतिक तौर पर ज्यादा परिपक्व व समझदार होते हैं। यह भी हमारी उपलब्धि रही है कि हमने कार्यकर्ताओं के शिक्षण-प्रशिक्षण पर पर्याप्त जोर दिया है। हमारे देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में इतना जोर नहीं दिया जाता।

ये हमारी कुछ ऐसी उपलब्धियां रही हैं, जो छोटी शक्ति के बावजूद हमें संगठन के बतौर न सिर्फ जिंदा बनाये हुए हैं, बल्कि समूचा कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन एक सैद्धान्तिक चुनौती के तौर पर हमें स्वीकारता रहा है। यदि हम सांगठनिक स्तर पर चुनौती नहीं खड़ी कर पाये और देश में सर्वभारतीय एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की दिशा में अपना अपेक्षित योगदान नहीं दे सके तो इसके कारण हमारी अपनी उस कार्यदिशा में रहे हैं जिनका ऊपर विस्तार से वर्णन किया गया है।

II
विचारधारात्मक, राजनीतिक, सांगठनिक विच्युत्तियां व भटकाव

A- विचारधारात्मक विच्युतियां व भटकाव

हमारे पार्टी संगठन ने विचारधारात्मक मामले में शुरू में कमजोरी प्रदर्शित की थी। इसकी पहली अभिव्यक्ति हमारे स्थापना सम्मेलन के उस प्रस्ताव में ही मिल गयी थी जिसमें हमने सही कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को प्रतिक्रांतिकारी "चार के गुट" कहा था और अवसरवादी हुआ-कुओ-फेंग को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष के बतौर चुने जाने पर बधाई संदेश दिया था। तीन दुनिया के विभेदीकरण के वर्ग सहयोगी प्रतिक्रियावादी सिद्धान्त का हमने समर्थन किया। हालांकि पांच साल बाद हमने अपनी गलती की लिखित आत्म-आलोचना की और उसे सुधार लिया लेकिन हमारी विचारधारात्मक विच्युतियां आगे भी व्यक्त होती रहीं। सबसे पहले हमारे संगठन के 1987 के एकता सम्मेलन के 'अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति के आकलन' दस्तावेज में सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के समाजवादी समाज के पूंजीवादी समाज में रूपान्तरण के बाद की स्थिति के बारे में हमारी अवस्थिति कुछ हद तक अधिभूतवादी -भाववादी दृष्टिकोण का शिकार थी। इस दृष्टिकोण की जड़ में इन भूतपूर्व समाजवादी देशों के बारे में निम्न-पूंजीवादी मोह रहा है। इनके बारे में हमारा यह मूल्यांकन भी गलत था कि ये दोलायमान चाल से चल रहे हैं जो कभी उन्हें उदारीकरण तथा बाजार की शक्तियों की ओर ले जाती है तो कभी "समाजवादी" नियंत्रण और योजना की ओर तथा इन समाजों में क्रांति के बाद

वर्तमान संस्थाओं के आधार पर ही वे समाजवाद की ओर लौट सकते हैं। यह भी उसी अधिभूतवादी-भाववादी दृष्टिकोण का परिणाम था।

इसके बाद विचारधारात्मक विच्युति 'मार्क्सवाद जिंदाबाद मंच' के आधार लेख "समाजवाद की समस्यायें, पूंजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति" के अनुपूरक में दिखाई पड़ी। अनुपूरक में कहा गया था कि 'महान बहस' को छेड़ने में माओ ने देरी करके गलती की थी। यह विचारधारात्मक विच्युति देश-काल -परिस्थितियों को संज्ञान में लिये बिना ही माओ द्वारा संशोधनवाद के विरुद्ध छेड़े गये विचारधारात्मक संघर्ष के बारे में गलत मूल्यांकन करने में व्यक्त होती है। यह विचारधारात्मक विच्युति उसी अनुपूरक में माओ और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में ली गयी सही अवस्थिति के विरोध में खड़ी है। इस संदर्भ में अनुपूरक में कहा गया था :

> " जहां तक माओ त्से-तुंग और चीन की पार्टी की भूलों-गलतियों का प्रश्न है, आज एक परिपक्व अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व का अभाव इनके सही-संतुलित मूल्यांकन के काम को अत्यन्त कठिन बना देता है और वास्तव में इनके सम्यक और सांगोपांग आकलन-मूल्यांकन-समाहार का काम तो तभी हो सकेगा, जब उसी स्तर का सामाजिक प्रयोग किसी देश विशेष में हो रहा हो या हो चुका हो और उससे उन्नत स्तर के सामाजिक प्रयोग की आवश्यकता या पूर्वाधार मौजूद हो। केवल तभी माओ के निर्देशन और नेतृत्व में हुए महान समाजवादी प्रयोगों की त्रुटियों-कमियों से सबक लेकर नये सिद्धान्त विकसित किये जा सकते हैं और सामाजिक प्रयोग द्वारा उन्हें सत्यापित और प्रमाणित किया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास और नेताओं के मूल्यांकन और महान क्रांतियों की सफलताओं-असफलताओं के लिए उत्तरदायी मनोगत उपादानों के विश्लेषण में केवल यही दृष्टिकोण और पहुंच सही हो सकती है।"

माओ द्वारा 'महान बहस' की देरी से शुरूआत के बारे में जो विचारधारात्मक विच्युति अनुपूरक में दिखायी पड़ती है, उसने विकसित होकर बाद में कामरेड रामनाथ के लिए विचारधारात्मक भटकाव का रूप ग्रहण कर लिया। 1997 में अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन पर टिप्पणी करते हुए का. रामनाथ ने कहा कि माओ ने ख्रुश्चेव के संशोधनवाद के विरुद्ध खुला संघर्ष संचालित करने में सात साल तक देरी की। उनके अनुसार, यह चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की गम्भीर गलती थी। इन सात वर्षों के दौरान (1956-63) चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने ख्रुश्चेव के साथ समझौता किया। यह अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास और नेताओं के मूल्यांकन के सम्बन्ध में अपनी पूर्ववर्ती सही अवस्थिति के विपरीत अवस्थिति तो है ही, यह पूर्णतया गलत अवस्थिति है। यह विचारधारात्मक भटकाव की परिचायक है। स्थान-काल-परिस्थितियों को बगैर ध्यान दिये यह गैर जिम्मेदाराना दृष्टिकोण है। वे इतने पर ही नहीं रुकते। वे आगे बढ़कर इसे गैर-उसूली समझौता कहते हैं। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हए वे चीन की कम्युनिस्ट पार्टी पर यह टिप्पणी करते हैं कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी इंटरनेशनल बनाने की जरूरत नहीं समझती थी। वे इसी तरह, स्तालिन पर, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल पर और माओ पर गलती करने की स्वच्छंद बुद्धिजीवी की तरह गैर-जिम्मेदार टिप्पणी करते हैं। यह का. रामनाथ के विचारधारात्मक भटकाव की ही अभिव्यक्ति है। यहां जिम्मेदार कम्युनिस्ट दृष्टिकोण का अभाव है।

हमारे संगठन के 1987 के एकता सम्मेलन के दस्तावेज में साम्राज्यवाद की शक्ति को कम करके आंका गया था। साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांति के युग के अंतर्गत वर्तमान चरण का आर्थिक नव-उपनिवेशवाद का सूत्रीकरण सही था। लेकिन इस चरण के अंतर्गत साम्राज्यवाद द्वारा अपनी लूट और प्रभुत्व को बनाये रखने और बढ़ाने के लिए उसकी राजनीतिक-सामरिक शक्ति के इस्तेमाल के बारे में पर्याप्त जोर नहीं था। दो अति महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण तीसरी दुनिया के शासकों द्वारा अनौपनिवेशीकरण करने की प्रक्रिया पर जरूरत से ज्यादा जोर था। इसकी एक अभिव्यक्ति दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की सफलता से बहुत ज्यादा उम्मीदें रखने में दिखायी देती थी।

B- राजनीतिक विच्युतियां और भटकाव

विचारधारात्मक गलतियों के अलावा हमारी कई राजनीतिक गलतियां भी थीं। 1987 के दस्तावेज में भारतीय समाज में साम्राज्यवाद और सामंतवाद की ताकत को कम करके आंकने का विश्लेषण मौजूद था। 1987 के राष्ट्रीय परिस्थितियों के दस्तावेज में 1947 में सत्ता हस्तांतरण पूंजीपति वर्ग के हाथ में बताया गया लेकिन पूंजीपति वर्ग द्वारा सामंती ताकतों के साथ गठजोड़ बनाने का जिक्र नहीं किया गया।

हमारे संगठन में सबसे गम्भीर विच्युति निष्क्रिय उग्रपरिवर्तनवाद की रही है। यह विच्युति 1980 के दशक के शुरू से ही मौजूद रही है। हमारा संगठन मजदूर वर्ग और अन्य मेहनतकश वर्गों के वर्ग-संघर्ष को विकसित करने वाले संगठन

के बजाय क्रमशः निष्क्रिय उग्रपरिवर्तनवादी संगठन में तब्दील होता गया था। इसी विच्युति के कारण इसके कई हिस्से अलग होने के बाद निष्क्रिय उग्रपरिवर्तनवादी भटकाव के शिकार हो गये और बात बहादुर बन कर रह गये।

इन राजनीतिक विच्युतियों को आगे बढ़ाते हुए 1997 में का. रामनाथ ने कई गलत बातें कहना शुरू कर दिया था। उन्होंने साम्राज्यवाद के बारे में लेनिन की व्याख्या को तोड़ा मरोड़ा। उनके अनुसार साम्राज्यवादी अपने देश के अभिजात मजदूरों को घूस देता है लेकिन मजदूर वर्ग उसे घूस नहीं बल्कि अपना अधिकार समझता है। यह साम्राज्यवादी देशों के अभिजात मजदूरों के एक हिस्से के वर्ग-सहयोगी सामाजिक जनवादी चरित्र पर पर्दा डालना है। इसी प्रकार, पूंजीवाद के अंतर्गत सेवा क्षेत्र के विकास की असीम संभावनाओं की बात करने का अर्थ स्पष्ट तौर पर क्रांति की संभावना से इंकार करना है। भारतीय पूंजीपतियों के बारे में 1987 में साम्राज्यवाद के कनिष्ठ साझेदार के अपने सही सूत्रीकरण से पीछे हटते हुए का. रामनाथ ने शत्रु सहयोगी (Collaborationist) कहना शुरू कर दिया। यह गैर-जिम्मेदारीपूर्ण तो था ही, इसके अलावा यह गलत भी था। इसी प्रकार, भारतीय क्रांति के सहयोगी के बतौर छोटे उद्योगपतियों और धनी किसानों की भूमिका को वे देखने लगे।

इन राजनीतिक भटकावों के कारण समाजवादी क्रांति में कमजोर समझ रखने वाले कुछ कार्यकर्ता हिल गये और वे पुनः नव-जनवादी क्रांति की मंजिल मानने वाली धारा में चले गये। इन राजनीतिक भटकावों का एक दुष्परिणाम यह निकला कि कम्युनिस्ट क्रांतिकारी खेमे के भीतर समाजवादी क्रांति के पक्ष में एक हद तक बहस कमजोर हुई।

इन राजनीतिक भटकावों की अन्य अभिव्यक्ति तीसरी दुनिया के शासक वर्गों के साम्राज्यवाद-विरोधी चरित्र पर ज्यादा जोर देने के रूप में भी होती है। इन भटकावों के चलते तीसरी दुनिया के देशों का विश्लेषण राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य से किया जाता है। यह किसी न किसी रूप में "तीन दुनिया के विभेदीकरण" के वर्ग सहयोगी सिद्धान्त का अवशेष है।

C- सांगठनिक कार्यदिशा सम्बन्धी विच्युतियां और भटकाव

हमारे पार्टी संगठन ने अपने स्थापना सम्मेलन के समय से ही सही विचारधारात्मक-राजनीतिक आधार पर एकल पार्टी के गठन का लक्ष्य केन्द्र में रखा था। 1983 में समाजवादी क्रांति की कार्यदिशा निरूपित किये जाने और 1987 में अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय परिस्थिति का आकलन कर लेने के बाद भी इसने अपने केन्द्रीय कार्यभार को पूरा करने के लिए पर्याप्त शक्ति नहीं लगायी।

इसके साथ ही, हमारा पार्टी संगठन लम्बे समय तक लेनिनवादी उसूलों पर दृढ़तापूर्वक नहीं चला। इसमें सामूहिक नेतृत्व की प्रणाली नहीं विकसित की गयी। जनवादी केन्द्रीयता को नहीं लागू किया गया। रूप और अंतर्वस्तु के बेमेल होने का हवाला देकर एक व्यक्ति का एकछत्र नेतृत्व कायम रहा। पार्टी का ढांचा नहीं विकसित किया गया। पार्टी सदस्यों के अधिकार और कर्तव्य सुपरिभाषित नहीं रहे। आलोचना व आत्मालोचना की स्वस्थ परम्परा नहीं विकसित की गयी।

हमारी पार्टी-निर्माण सम्बन्धी पहुंच गैर-द्वन्द्ववादी-गैर-भौतिकवादी रही है। व्यक्ति केन्द्रित विश्लेषण करके कार्यकर्ताओं की आलोचना रोग को ठीक करने के बजाय रोगी को और ज्यादा बीमार बनाने की ओर ले जाती है। इस कार्यशैली ने तदर्थवाद, स्वेच्छाचारिता और अनौपचारिकतावाद को तो बढ़ाया ही, इसने षड़यंत्र-प्रतिषड़यंत्र के सिद्धान्त को भी रच डाला। इस कार्यशैली ने पार्टी संगठन के भीतर उठने वाले विवादों को शक, बदनीयती, गुटबाजी और षड़यंत्र के आधार पर देखा। फलस्वरूप पार्टी संगठन के भीतर स्वस्थ बहस के माहौल को खत्म कर दिया।

इसके अतिरिक्त, हमारा संगठन बुनियादी वर्ग– विशेष तौर पर औद्योगिक मजदूर वर्ग– से गलत फैसले के तहत कटा रहा। इसने निम्न-पूंजीवादी तबकों के जन-संगठन खड़े किये, जिनमें अधिकांश अनौपचारिकतावाद के शिकार रहे। इससे हमारे संगठन के वर्गीय संघटन का निम्न-पूंजीवादीकरण हुआ। फलस्वरूप, मनमानेपन के साथ संगठन खड़े करना और फिर उसी अंदाज में भंग कर देना, उसका समाहार न करना और जनता के प्रति जवाबदेही न होना होता रहा है।

हमारे संगठन में मौजूद निम्न-पूंजीवादी दृष्टिकोण इसे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी खेमे और मजदूर मेहनतकश जनता से अलग-थलग एकान्तवासी पंथ के अनुरूप आचरण करने की ओर ले गया।

इन सांगठनिक विच्युतियों और भटकावों ने हमारे सगठन में संकीर्णतावादी (पंथवादी) प्रवृत्तियों को फलने-फूलने की जमीन और मजबूत की।

III

हमारे पार्टी संगठन में विच्युतियों-भटकावों और टूट-फूट के वस्तुगत और मनोगत कारण

हमारे देश का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन का अभिन्न अंग है तथा हमारा पार्टी संगठन भारतीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा है। आज अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन और भारतीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन अपने समूचे इतिहास के सबसे अधिक संकटपूर्ण स्थिति से गुजर रहा है।

एक तरफ, साम्राज्यवाद अति उत्पादन के संकट से ग्रस्त है। पूंजी के विशाल पैमाने पर संचय ने निवेश कर मुनाफा अर्जित करने की संभावना को बहुत कम कर दिया है। इसके लिए साम्राज्यवादी तरह-तरह की तरकीबें निकाल रहे हैं। उन्होंने उत्पादन और वितरण को पुनर्गठित किया है। इस पुनर्गठन ने मजदूरों की मजदूरी को गिराने में भूमिका अदा की है। मेहनतकशों की श्रमशक्ति की कीमत घटी है। साम्राज्यवादी दुनिया के पैमाने पर अपने संकट का बोझ मेहनतकशों पर डाल रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक ठहराव, बेरोजगारी, दरिद्रता, ऋणग्रस्तता तथा आसमान छूती सट्टेबाजी बढ़ी है।

दूसरी तरफ, साम्राज्यवाद के इस हमले के सामने मजदूर वर्ग लगातार पीछे हटा है। यह पीछे हटना भी बेतरतीब तथा बदहवासी भरा रहा है। "कल्याणकारी राज्यों" के दौर में मजदूर वर्ग को जो भी अधिकार व सुविधायें मिली थीं, वे एक-एक करके छीनी जा रही हैं। मजदूर आंदोलन का सुधारवादी नेतृत्व इन हमलों के समक्ष किंकर्तव्यविमूढ़ है हालांकि उनके पापों की सजा समूचे मजदूर वर्ग को मिल रही है। ऐसी स्थिति में, अभिजात मजदूरों का प्रतिनिधित्व करने वाले सुधारवादी नेतृत्व का आधार कमजोर हो रहा है। फिर भी, अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन में हाल-फिलहाल उभार के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर क्रांति की आत्मगत शक्तियां कमजोर हैं। 1976 में माओ की मृत्यु के पश्चात चीन में पूंजीवाद पुनर्स्थापना हो गयी थी। वर्तमान में, न तो कोई समाजवादी देश है और न ही अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर कम्युनिस्ट आंदोलन में कोई स्थापित नेतृत्व है। विचारधारा के प्रश्न पर विभ्रम की स्थिति विद्यमान है। दुनिया में, अलग-अलग देशों में कम्युनिस्ट क्रांतिकारी छोटे-छोटे ग्रुपों में बंटे हुए हैं। विचारधारात्मक विभ्रम की स्थिति और कम्युनिस्ट आंदोलन में स्थापित नेतृत्व के अभाव के चलते विचाधारात्मक विच्युतियों और भटकावों के लिए उपयुक्त जमीन मिली है। अतीत में स्थापित नेतृत्व के काल में, जब भी विचारधारात्मक-राजनीतिक भटकाव दिखाई पड़ता था तो अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में उसके विरुद्ध समझौता विहीन संघर्ष चलाकर विजातीय विचारधारा को पराजित किया जाता था। लेकिन आज यह स्थिति नहीं है।

साम्राज्यवाद के सामयिक तौर पर हमलावर होने तथा अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के कमजोर पड़ने व मजदूर आंदोलन के पीछे हटने का प्रभाव हमारे देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन पर भी पड़ा है। यह इसके अंदर तरह-तरह की विजातीय प्रवृत्तियां बढ़ाने में भूमिका अदा कर रहा है।

इसके साथ ही, हमारे देश के कम्युनिस्ट आंदोलन में लम्बे समय से संशोधनवाद तथा "वामपंथी" दुस्साहसवाद का प्रभाव रहा है। नक्सलबाड़ी किसान उभार के बाद संशोधनवाद से निर्णायक विच्छेद तो कर लिया गया लेकिन संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष को धैर्यपूर्वक नहीं चलाया गया। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) की आतंकवादी कार्यदिशा के विरुद्ध कुछ कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों व ग्रुपों ने सुसंगत तरीके से व सही मार्क्सवादी अवस्थिति से संघर्ष चलाया। लेकिन अधिकांश संगठनों ने अनुभवजन्य तरीके से इसे छोड़ दिया। इसके विरुद्ध विचारधारात्मक-राजनीतिक संघर्ष चलाकर इसे पराजित नहीं किया गया। परिणामस्वरूप, दोनों विचारधारात्मक भटकावों- संशोधनवाद और 'वामपंथी' दुस्साहसवाद– का प्रभाव कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के अंदर किसी न किसी मात्रा में मौजूद है।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.) के नव-संशोधनवाद से निर्णायक विच्छेद के बाद आतंकवादी कार्यदिशा के आधार पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मा.ले.) का गठन हुआ था। इसके गठन के समय अपेक्षाकृत सही राजनीतिक अवस्थिति वाले संगठन विशेषतौर पर आंध्र प्रदेश के डी.वी. राव-टी. नागी रेड्डी ग्रुप इससे बाहर थे। इसलिए यह गठन इस देश में एकल कम्युनिस्ट पार्टी का गठन नहीं था, बल्कि उस समय मौजूद कई कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों में वह एक संगठन मात्र था। तब से हमारे देश का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन अनेक छोटे-बड़े ग्रुपों में बंटा हुआ है। विचारधारात्मक विभ्रम की स्थिति में अक्सर गैर-जरूरी व अवांछित फूटें होती रही हैं। अक्सर ऐसी फूटों के बाद बनने वाले संगठन विचारधारात्मक- राजनीतिक तौर पर और कमजोर होते हैं तथा कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में विचारधारात्मक विच्युतियों और भटकावों के बढ़ने का माहौल ज्यादा मिल जाता है। यही कारण है कि मूलतया एक ही

विचारधारात्मक-राजनीतिक अवस्थितियों वाले कई संगठन अलग-अलग विद्यमान हैं। नव-संशोधनवादी नेतृत्व के विरुद्ध विद्रोह के इतने लम्बे समय के बाद भी सर्वभारतीय एकल कम्युनिस्ट पार्टी का गठन नहीं हो सका है। कोढ़ में खाज यह कि कुछ कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन अपने आप को कम्युनिस्ट पार्टी कहते हैं। यह सही विचारधारात्मक-राजनीतिक आधार पर एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की चुनौती से पलायन के साथ ही एक दम्भपूर्ण घोषणा है। इससे एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की प्रक्रिया और ज्यादा जटिल हो जाती है क्योंकि इससे कई कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों के लिए सही विचारधारात्मक-राजनीतिक आधार पर सर्वभारतीय एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन का कार्यभार केन्द्रीय कार्यभार के बतौर नहीं रह जाता।

क्रांति की वस्तुगत परिस्थिति की मौजूदगी के बारे में गलत मूल्यांकन भी कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के भीतर तरह-तरह के भटकावों के लिए खाद-पानी का काम कर रहा है। यह गलत मूल्यांकन भी दक्षिणपंथी अवसरवाद या 'वामपंथी' दुस्साहसवाद के भटकावों को जन्म दे रहा है।

देश-दुनिया के इन वस्तुगत व इतिहास जन्य कारकों का प्रभाव हमारे संगठन पर भी पड़ा है। हमारा संगठन भी सर्वहारा वर्ग की विचारधारा पर दृढ़ता से कायम रहते हुए विजातीय विच्युतियों और भटकावों के विरुद्ध पर्याप्त संघर्ष नहीं कर सका। बल्कि खुद यह विचारधारात्मक-राजनीतिक व सांगठनिक विच्युतियों व भटकावों का समय-समय पर शिकार होता रहा।

IV
हमारी विच्युतियों-भटकावों और टूट-फूट का सामाजिक आधार

हमारे पार्टी संगठन में आये विचारधारात्मक-राजनीतिक तथा सांगठनिक कार्यदिशा सम्बन्धी विच्युतियों-भटकावों और टूट-फूट में अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय परिस्थितियों के प्रभाव की भूमिका है, यह निर्विवाद है। लेकिन इससे हमारी जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती। हम कम्युनिस्ट हैं और धारा के विरुद्ध तैरने का साहस रखते हैं।

हमने चारू मजूमदार की आतंकवादी कार्यदिशा को तो छोड़ दिया था लेकिन उसकी सहवर्ती संकीर्णतावादी सांगठनिक कार्यदिशा को व्यवहार में नहीं छोड़ सके।

इसका एक कारण हमारे पार्टी संगठन का मजदूर वर्ग के बीच केन्द्रित न होना रहा है। हमारा पार्टी संगठन कहने को तो सर्वहारा वर्ग का हिरावल दस्ता रहा है, लेकिन अपने आप को वह लम्बे समय तक सर्वहारा वर्ग से दूर किये रहा है।

हमारा पार्टी संगठन न सिर्फ औद्योगिक मजदूर-वर्ग से कटा रहा है बल्कि यह ग्रामीण मजदूरों और अर्द्ध सर्वहारा व छोटे किसानों के बीच अपने काम को छोड़कर, अपने नेतृत्व में चलने वाले वर्ग-संघर्ष से पलायन करके, निम्न-पूंजीवादी वर्गों-तबकों के बीच कार्य करता रहा है। इस पलायन ने हमारे पार्टी संगठन को मजदूर वर्ग व उसके घनिष्ठ सहयोगी अर्द्ध-सर्वहारा वर्ग के जनाधार से वंचित कर दिया। एक तरफ, इस पलायन ने हमें अपने वर्ग से दूर किया। दूसरी तरफ, इसने निम्न-पूंजीवादी वर्गों-तबकों के बीच हमारे काम को केन्द्रित किया। यह हमारे संगठन का निम्न-पूंजीवादीकरण ही था, जो हमारी तमाम विच्युतियों और भटकावों के लिए जिम्मेदार है। हमारे संगठन में निम्न-पूंजीवादी दृष्टिकोण की अभिव्यक्तियां अनेकानेक रूपों में होती रही हैं। ये विचारधारात्मक, राजनीतिक और सांगठनिक कार्यदिशा में व्यक्त होती रही हैं।

निम्न-पूंजीवादी दृष्टिकोण के आधार पर संगठन को लेनिनवादी उसूलों से नहीं संचालित किया जा सकता। निम्न-पूंजीवादी व्यक्तिवाद सामूहिक नेतृत्व के सीधे विरोध में खड़ा होता है। वह अपने को संगठन के अनुशासन से ऊपर समझता है। इसी के साथ वह दूसरों पर कड़ाई से अनुशासन की मांग करता है।

इस निम्न-पूंजीवादी दृष्टिकोण के प्रभावी होने के कारण हमारा पार्टी संगठन तदर्थवाद, स्वेच्छाचारिता, नौकरशाही की प्रवृत्ति, गैर-जिम्मेदाराना आचरण, मनोगत विश्लेषण इत्यादि बीमारियों का शिकार रहा है।

इस दृष्टिकोण के कारण क्रांतिकारी जनदिशा को नहीं लागू किया जा सका।

हमारे संगठन के भीतर निम्न-पूंजीवादी तत्वों की बहुलता तथा निम्न-पूंजीपति वर्ग में हमारा काम वह सामाजिक आधार रहा है जो हमारे तमाम भटकावों के लिए जिम्मेदार रहा है। इसके अलावा देश का निम्न पूंजीवादी वातावरण तो हमारे चारों ओर है ही।

V
हमारे इतिहास के सबक

अंत में, हमारे संगठन के इतिहास से ये कुछ महत्वपूर्ण सबक निकलते हैं-

1- किसी भी कम्युनिस्ट संगठन को अपने काम को मजदूर वर्ग के बीच (खासकर औद्योगिक मजदूर वर्ग के बीच) केन्द्रित करना चाहिये।

2- पार्टी संगठन को जनवादी केन्द्रीयता के लेनिनवादी उसूलों पर संगठित किया जाना चाहिए। पार्टी संगठन में हर स्तर पर सामूहिक नेतृत्व प्रणाली विकसित करनी चाहिए। पार्टी संगठन में स्वस्थ आलोचना-आत्मालोचना की शैली विकसित करनी चाहिए।

3- विचारधारात्मक-राजनीतिक-सांगठनिक कार्यदिशा सम्बन्धी विजातीय विचारों, प्रवृत्तियों के विरुद्ध दृढ़ता पूर्वक संघर्ष चलाकर उन्हें पराजित करना चाहिए।

4- पार्टी संगठन को क्रांतिकारी जनदिशा पर अमल करना चाहिए। "जनता से लेकर जनता को लौटाने" की कार्यशैली को विकसित करना चाहिए तथा उसे अमल में लाना चाहिए।

5- पार्टी नेतृत्व को आम कतारों के प्रति उत्तदायी बनाने की तथा पार्टी को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाने की प्रणाली विकसित करनी चाहिए।

6- पार्टी संगठन को गलतियों-कमियों-कमजोरियों का विश्लेषण करते समय सर्वप्रथम पार्टी की कार्यदिशा में इनके कारण देखने चाहिए और इसी के अंतर्गत ही पहले कमेटियों व फिर व्यक्तियों की गलतियों-कमियों-कमजोरियों को अवस्थित करना चाहिए।

■■■